श्रमसाधना

श्रम की शक्ति, राष्ट्र की प्रगति

shramsadhnagwl@gmail.com

साप्ताहिक

RNI रजि. क्र. 45334/74

वर्ष : 52, अंक : 39 ग्वालियर, रविवार 27 सितम्बर 2026

विक्रम संवत् 2083 पृष्ठ 12, मूल्य 1 रुपया

हम बनेंगे आपकी आवाज स्कैन करें और चैनल से जुड़े

www.shramsadhnanews.com

डाक पंजीयन

डाक L-2-13/समा.पत्र/पं. 40020250/22-23

दिल्ली-महाराष्ट्र में दावे-आपत्तियों की तारीख 30 अक्टूबर तक बढ़ी, फॉर्म-6 से नाम जुड़वाने की सुविधा

SIR पर चुनाव आयोग की बैठक, छूटे नामों के दस्तावेज घर से लेगा बीएलओ

नई दिल्ली जीएनएस

विशेष गहन पुनरीक्षण (SIR) को लेकर जारी विवाद के बीच चुनाव आयोग ने शनिवार को अहम बैठक की। बैठक में मुख्य चुनाव आयुक्त ज्ञानेश कुमार और चुनाव आयुक्त सुखबीर सिंह संधू तथा विवेक जोशी मौजूद रहे। आयोग ने कहा कि बिहार और पश्चिम बंगाल सहित 20 राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों में (SIR) की प्रक्रिया पूरी हो चुकी है। इस दौरान जिन लोगों का नाम मतदाता सूची में छूट गया है या जो नए मतदाता हैं, वे निर्धारित प्रक्रिया के तहत नाम शामिल कराने के लिए आवेदन कर सकते हैं।

आयोग के अनुसार जिन लोगों को नोटिस जारी किया गया है, उनके दस्तावेज लेने के लिए बूथ लेवल अधिकारी उनके घर भी जा सकेंगे। प्राप्त दस्तावेज ECINet पर अपलोड किए जाएंगे। इसके बाद संबंधित निर्वाचन अधिकारी दस्तावेजों की जांच कर निर्णय लेंगे। आवश्यकता होने पर ऑनलाइन सुनवाई भी की जा सकेगी।

दिल्ली-महाराष्ट्र में 30 अक्टूबर तक दावे : बैठक में दिल्ली और महाराष्ट्र में दावे एवं आपत्तियां दाखिल करने की समयसीमा 30 अक्टूबर 2026 तक बढ़ाने का फैसला किया गया। दिल्ली में दावे-आपत्तियों के निपटारे की अंतिम तारीख 30 नवंबर और महाराष्ट्र में 10 नवंबर निर्धारित की गई है।

गोवा में मतदाता सूची से छूटे लोगों के लिए ब्लॉक स्तर के

अधिकारी घर-घर जाकर फॉर्म-6 भी एकत्र करेंगे। आयोग ने स्पष्ट किया कि SIR के दौरान नाम छूटने वाले पात्र मतदाताओं के लिए फॉर्म-6 के जरिए नाम शामिल कराने की प्रक्रिया उपलब्ध है। आयोग ने कहा कि फॉर्म-6 को लेकर कोई विवाद नहीं है और इसे सुप्रीम कोर्ट ने भी बरकरार रखा है।

कांग्रेस ने उठाए सवाल : SIR की प्रक्रिया को लेकर कांग्रेस सहित विपक्षी दल लगातार सवाल उठा रहे हैं। कांग्रेस का आरोप है कि मुख्य चुनाव आयुक्त ज्ञानेश कुमार द्वारा आयोग में मनमाने तरीके से निर्णय लिए जा रहे हैं और अन्य चुनाव आयुक्तों की आपत्तियों को पर्याप्त महत्व नहीं दिया जा रहा। पार्टी ने मुख्य चुनाव आयुक्त को हटाने और उनकी गिरफ्तारी की मांग को लेकर शुक्रवार को देशभर में प्रदर्शन भी किया।

चुनाव से जुड़े कुछ आदेशों और कथित सॉफ्टवेयर बदलावों को लेकर सुप्रीम कोर्ट में भी याचिका दाखिल की गई है। वहीं, एक रिपोर्ट में दावा किया गया है कि पिछले 10 महीनों में दोनों चुनाव आयुक्तों ने आयोग के फैसलों पर 14 बार आपत्ति जताई। हालांकि आयोग की ओर से शनिवार की बैठक के बाद कहा गया कि (SIR) से जुड़े फैसले सर्वसम्मति से लिए गए हैं।

चार मुद्दों पर उठे सवाल : रिपोर्ट के अनुसार दोनों चुनाव आयुक्तों ने (SIR) प्रक्रिया से जुड़े कुछ मुद्दों पर सवाल उठाए थे। इनमें नए मतदाताओं के फॉर्म-6 में पिछली (SIR) सूची में स्वयं या परिवार के सदस्यों के नाम की जानकारी मांगे जाने का मुद्दा शामिल था। इसके अलावा मतदाता डाटा के नियंत्रण में राज्यों की भूमिका, पश्चिम बंगाल में हटाए गए नामों को लेकर करीब 16 लाख अपीलों और गोवा में सॉफ्टवेयर संबंधी समस्या के कारण अंतिम सूची से छूटे 97 पात्र मतदाताओं का मामला भी उठाया गया था।

आयोग ने बैठक में मतदाताओं को नाम शामिल कराने और दावे-आपत्तियां दर्ज कराने की प्रक्रिया को लेकर अधिकारियों को आवश्यक निर्देश दिए हैं।

उत्तराखंड में बर्फबारी और भूस्खलन से सड़कें प्रभावित, यूपी में 48 घंटे से बारिश

बारिश का रेड अलर्ट, चारधाम यात्रा दो दिन के लिए रोकी

नई दिल्ली जीएनएस

उत्तराखंड में भारी बारिश के बीच मौसम विभाग ने कई इलाकों के लिए रेड अलर्ट जारी किया है। चमोली के हेमकुंड साहिब और बद्रीनाथ में शनिवार को बर्फबारी हुई। पिथौरागढ़-घाट सड़क पर भूस्खलन के कारण 300 से अधिक वाहन फंस गए। खराब मौसम को देखते हुए चारधाम यात्रा दो दिनों के लिए रोक दी गई है।

बंगाल की खाड़ी में बने मौसमी तंत्र के प्रभाव से उत्तर प्रदेश, बिहार समेत आठ राज्यों में तेज बारिश हो रही है। यह तंत्र

दक्षिण छत्तीसगढ़ से उत्तर-पूर्व की ओर बढ़ रहा है। इसके प्रभाव से राजस्थान और मध्यप्रदेश समेत 14 राज्यों में मौसम को लेकर चेतावनी जारी की गई है।

उत्तर प्रदेश में करीब 48 घंटे से लगातार बारिश हो रही है। कई इलाकों में 40 से 50 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से हवाएं चल रही हैं। बारिश और तेज हवाओं से जुड़े अलग-अलग हादसों में 16 लोगों की मौत हो चुकी है। प्रदेश के 32 जिलों में बाढ़ का खतरा बताया गया है।

बिहार में सुपौल के करीब 50 गांव बाढ़ से प्रभावित हैं। राज्य के 19 जिलों में यलो अलर्ट जारी किया गया है। बारिश से जुड़ी घटनाओं में तीन लोगों की मौत की जानकारी सामने आई है।

मुख्यमंत्री ने रजत पदक विजेता खिलाड़ियों को दी बधाई

भोपाल जीएनएस

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने एशियन गेम्स- 2026 की महिला 50 मीटर राइफल 3 पोजिशन टीम स्पर्धा में रजत पदक जीतने पर सुश्री तिलोत्तमा सेन, सुश्री विदर्शा विनोद कोचलुमकल और सुश्री आशी चौकसे को बधाई और शुभकामनाएं दी हैं।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने एक्स पर कहा कि निशानेबाजी में यह सफलता युवा खिलाड़ियों के लिए प्रेरणादायी और नई ऊंचाइयों की ओर बढ़ते कदमों का परिचायक है।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने स्वर्ण पदक विजेता महिला कबड्डी टीम को दी बधाई

भोपाल जीएनएस

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने जापान में चल रहे एशियन गेम्स-2026 में भारतीय महिला कबड्डी टीम को स्वर्ण पदक जीतने पर बधाई एवं शुभकामनाएं दीं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने %एक्स% पर कहा कि भारत की बेटियों ने स्वर्णिम कीर्तिमान रचते हुए शानदार खेल का प्रदर्शन किया। उनके जज्बे ने माँ भारती और तिरंगे का मान बढ़ाया है। उन्होंने कहा कि हमारी बेटियों की यह उपलब्धि भारतीय खेल जगत को गौरवान्वित करेगी और युवा खिलाड़ियों को आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करेगी।

एक ही दिन कबड्डी में भारत के दो स्वर्ण, ईरान को हराकर रचा इतिहास

नागोया जीएनएस

एशियन गेम्स में भारत ने शनिवार को कबड्डी में शानदार प्रदर्शन करते हुए एक ही दिन महिला और पुरुष दोनों वर्गों में स्वर्ण पदक जीत लिए। महिला टीम ने फाइनल में ईरान को 37-34 से हराया। इसके बाद पुरुष टीम ने भी ईरान को 40-34 से शिकस्त देकर स्वर्ण अपने नाम किया। पुरुष टीम ने एशियन गेम्स में लगातार 10वीं बार पदक जीता है। वहीं, भारतीय महिला टीम ने लगातार पांचवें एशियाड में पदक हासिल किया। दोनों टीमों की जीत से कबड्डी में भारत का दबदबा एक बार फिर देखने को मिला।

दूसरे हाफ में बदला मुकाबले का रुख : पुरुषों के फाइनल में ईरान ने पहले हाफ के अंत में 18-17 की बढ़त बना ली थी। दूसरे हाफ की शुरुआत में भी ईरान ने दबाव बनाए रखा, लेकिन भारतीय टीम ने धीरे-धीरे मुकाबले पर नियंत्रण हासिल कर लिया। सुमित ने डिफेंस में महत्वपूर्ण टैकल किए, जबकि अर्जुन देशवाल ने रेडिंग में अंक जुटाए। 21-21 की बराबरी के बाद भारत ने बढ़त बनानी शुरू की और अंत में 40-34 से मुकाबला जीत लिया। महिला फाइनल में भी भारत और ईरान के बीच कड़ा मुकाबला हुआ। भारतीय टीम ने कई मौकों पर बढ़त बनाई, लेकिन ईरान ने वापसी की कोशिश की। आखिरी मिनटों में भारतीय डिफेंस ने बढ़त कायम रखी और भारत ने 37-34 से जीत दर्ज की।

शॉटपुट में तजिंदरपाल को रजत : कबड्डी के अलावा तजिंदरपाल सिंह तूर ने पुरुषों के शॉटपुट में रजत पदक जीता। वहीं, स्क्वॉश में 18 वर्षीय अनाहत सिंह ने महिला एकल और अभय सिंह ने पुरुष एकल के फाइनल में जगह बनाई। एशियन गेम्स में यह पहली बार है जब भारत के दो खिलाड़ी एकल वर्ग के फाइनल में पहुंचे हैं।

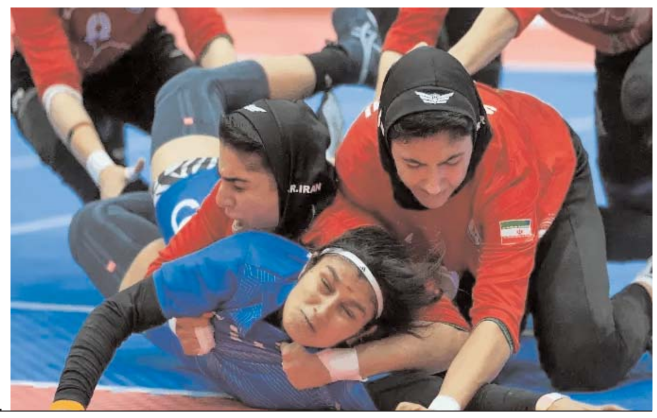

पितृपक्ष को हिंदू धर्म में पूर्वजों के प्रति श्रद्धा और सम्मान व्यक्त करने का समय माना जाता है. इस दौरान लोग अपने पितरों के लिए श्राद्ध, तर्पण और पिंडदान जैसे कर्म करते हैं. श्राद्ध के समय ब्राह्मणों को भोजन कराने के साथ जरूरतमंदों को भोजन और दान देने की भी परंपरा है. धार्मिक मान्यताओं के अनुसार श्राद्ध के भोजन को सामान्य भोजन से अलग माना जाता है. इसे पितरों को समर्पित करके तैयार किया जाता है और इसके बाद ब्राह्मणों, जरूरतमंदों तथा परिवार के लोगों को भोजन कराया जाता है. हालांकि, श्राद्ध के भोजन को लेकर कुछ विशेष परंपराएं भी बताई गई हैं कि किन लोगों को यह भोजन कराया जाए और किन लोगों को इससे दूर रहना चाहिए.

पितृपक्ष में श्राद्ध का खाना किसे- किसे खिलाएं? जान लें जरूरी नियम

2026 में कब से शुरू होगा पितृपक्ष?

पंचांग के अनुसार, साल 2026 में पितृपक्ष की शुरुआत 26 सितंबर 2026 को पूर्णिमा श्राद्ध से होगी. वहीं, प्रतिपदा श्राद्ध से पितृपक्ष की शुरुआत 27 सितंबर 2026 से मानी जाएगी. इसका समापन 10 अक्टूबर 2026 को सर्वपितृ अमावस्या के साथ होगा.

सबसे पहले योग्य ब्राह्मणों को कराया जाता है भोजन

धार्मिक परंपरा में श्राद्ध के दिन सात्विक और विद्वान ब्राह्मण को भोजन कराने की विशेष परंपरा बताई गई है. माना जाता है कि ब्राह्मण को श्रद्धापूर्वक भोजन कराने के बाद ही श्राद्ध कर्म को पूरा माना जाता है.

जरूरतमंद और गरीबों को भी करा सकते हैं भोजन

श्राद्ध के दौरान केवल ब्राह्मणों को ही भोजन कराने की परंपरा नहीं है. धार्मिक मान्यताओं के अनुसार गरीब, भूखे, असहाय और जरूरतमंद लोगों को भोजन कराना भी पुण्यदायक माना जाता है. इसलिए अगर किसी कारण से ब्राह्मण न मिल पाएं तो, किसी जरूरतमंद व्यक्ति को भोजन करा सकते हैं.

क्या परिवार के लोग श्राद्ध का खाना खा सकते हैं?

श्राद्ध के भोजन को लेकर कई लोगों के मन में यह सवाल रहता है कि क्या परिवार के सदस्य इसे खा सकते हैं. धार्मिक परंपराओं के अनुसार, कुल-गोत्र और परिवार के लोग श्राद्ध का भोजन ग्रहण कर सकते हैं. इसे दोषपूर्ण नहीं माना जाता.

पंचबलि का भी है विशेष महत्व

श्राद्ध कर्म में पंचबलि की परंपरा के बारे में खासतौर पर बताया गया है, जिसमें भोजन का एक हिस्सा अलग-अलग जीवों के लिए निकाला जाता है. इसमें गाय, कुत्ता, कौआ और चींटी आदि के लिए भोजन निकालने की परंपरा कई परिवारों में निभाई जाती है.

किन लोगों को श्राद्ध का भोजन नहीं कराना चाहिए?

धार्मिक परंपराओं में श्राद्ध के भोजन को सात्विक रखने पर जोर दिया जाता है. इसी वजह से मांसाहार, मदिरा या अन्य नशीली चीजों का सेवन करने वाले लोगों को श्राद्ध का भोजन न कराने की बात कही जाती है.

इस्लाम में काबा शरीफ को सबसे मुकद्दस जगहों में से एक माना जाता है. इसे बैतुल्लाह यानी अल्लाह का घर भी कहा जाता है. सऊदी अरब के मक्का शहर में मस्जिद अल-हरम के बीचों-बीच मौजूद काबा की तरफ दुनिया भर के मुसलमान नमाज के वक्त रुख करते हैं. यही वजह है कि काबा शरीफ का इस्लाम में बेहद खास मुकाम है और हर मुसलमान के लिए इसका बड़ी अहमियत है.

काबा शरीफ की दहलीज इतनी ऊंची क्यों है? इस्लामिक हदीस में मिलता है ये जिक्र

आपने कभी गौर किया होगा कि काबा शरीफ का दरवाजा जमीन के बिल्कुल बराबर नहीं है, बल्कि काफी ऊंचाई पर है. इसे देखकर अक्सर मन में सवाल आता है कि आखिर अल्लाह के घर का दरवाजा जमीन से इतना ऊपर क्यों बनाया गया? क्या इसके पीछे सिर्फ कोई तामीरी वजह है या फिर इसका ताल्लुक इस्लामिक तारीख के किसी खास वाकये से है? इस सवाल का जिक्र खुद एक मशहूर हदीस में मिलता है.

कुरैश ने काबा का दरवाजा ऊंचा क्यों किया?

सहीह अल-बुखारी में हजरत आयशा रजियल्लाहु अन्हा से रिवायत है कि उन्होंने पैगंबर मुहम्मद साहब काबा की दीवार और उसके दरवाजे के बारे में पूछा. जब उन्होंने पूछा कि काबा का दरवाजा इतना ऊंचा क्यों है, तो पैगंबर मुहम्मद साहब ने बताया कि कुरैश ने ऐसा इसलिए किया था ताकि वे अपनी मर्जी से किसी को काबा में दाखिल होने दें और किसी को रोक सकें.

यानी हदीस के मुताबिक, दरवाजा ऊंचा करने का मकसद सिर्फ तामीरी जरूरत नहीं था, बल्कि काबा में दाखिले को अपने कंट्रोल में रखना भी था. उस वक्त जिस व्यक्ति को इजाजत मिलती, वही अंदर दाखिल हो सकता था.

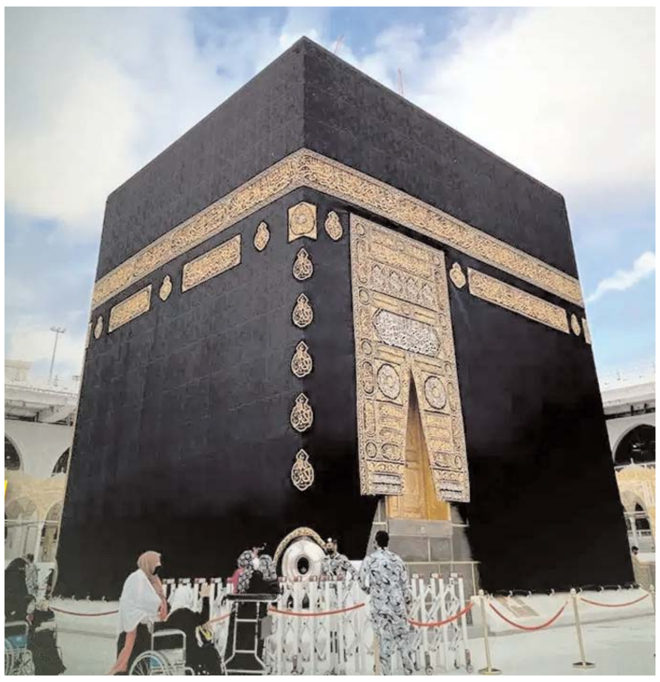

हजरत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के बनाए काबा से क्या था फर्क?

हदीस में ये भी आता है कि अगर कुरैश का दौर इस्लाम के लिए नया न होता और लोगों के दिलों में इसे लेकर किसी तरह की परेशानी पैदा होने का डर न होता, तो मुहम्मद साहब ने काबा को हजरत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की बुनियाद के मुताबिक दोबारा बनाते और उसके दरवाजे को जमीन के बराबर कर देते. साथ ही हतीम यानी हिज्र-ए-इस्माइल के हिस्से को भी काबा की इमारत में शामिल कर देते.

यही वजह है कि काबा का मौजूदा ऊंचा दरवाजा इस्लामिक तारीख के उस दौर की याद दिलाता है, जब कुरैश ने काबा का दोबारा निर्माण किया था. काबा का दरवाजा जमीन से लगभग 7 फीट ऊपर है.

काबा के दरवाजे का नाम

काबा के मेन एंट्रेंस गेट को बाब अल-काबा या बाब अर-रहमा कहा जाता है. ये दरवाजा असली सोने से बना है, जिसे 1979 में सऊदी अरब के राजा शाह खालिद के आदेश पर तैयार किया गया था. इसके अलावा, काबा के अंदर छत तक जाने वाली सीढ़ियों के लिए भी एक अलग दरवाजा मौजूद है, जिसे बाब अल-तौबा कहा जाता है. काबा की चाबी पिछले 1400 से ज्यादा सालों से बनी शैबा परिवार के पास है. इस परिवार के सदस्यों को 'सादीन' कहा जाता है. पैगंबर मुहम्मद के समय से ही ये जिम्मेदारी इसी परिवार को सौंपी गई थी, जो पीढ़ी-दर-पीढ़ी चली आ रही है.

काबा के अंदर कौन जा सकता है?

काबा के अंदर आम तौर पर हर जायरीन के लिए दाखिला खुला नहीं होता. आम हजयात्री या आम लोग काबा के अंदर नहीं जा सकते हैं. इसके अंदर जाने की इजाजत सिर्फ कुछ खास लोगों को ही मिलती है. शैबा परिवार के सदस्य काबा की चाबी संभालते हैं और इसके रख-रखाव की जिम्मेदारी निभाते हैं. इस परिवार की इजाजत के कोई भी काबा में दाखिल नहीं हो सकता है. सऊदी सरकार की तरफ से आमंत्रित चुनिंदा विदेशी मेहमान, राजनेता या इस्लामिक देशों के प्रमुख ही इसके अंदर जा सकते हैं. सहीह बुखारी की एक रिवायत में आता है कि फतह मक्का के मौके पर रसूल अल्लाह ने काबा की चाबी मंगवाई और उस्मान बिन तल्हा ने दरवाजा खोला, जिसके बाद पैगंबर मुहम्मद साहब कुछ सहाबा के साथ अंदर दाखिल हुए.

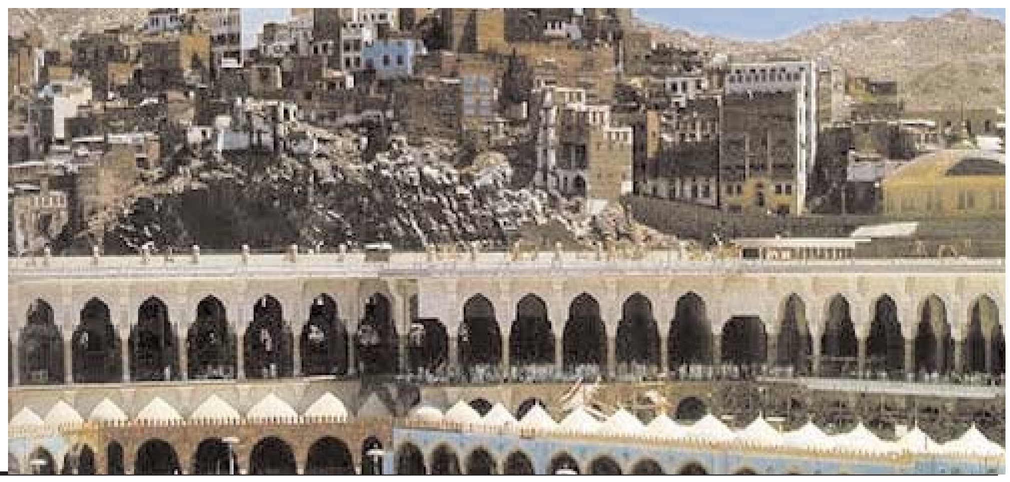

श्रमसाधना
www.shramsadhnanews.com
विविध
ग्वालियर, रविवार 27 सितम्बर 2026

आधुनिक तकनीक से बेहतर उत्पादन और आय वृद्धि की नई राह

कहानी बदलाव की: उन्नत तकनीक से संवरी खेती: किसान सोबरन सिंह धाकड़ ने रिज एंड फरो पद्धति से सोयाबीन उत्पादन में स्थापित की मिसाल

शिवपुरी, जीएनएस। शिवपुरी शहर के फतेहपुर निवासी कृषक सोबरन सिंह धाकड़ परंपरागत खेती से हटकर आधुनिक और वैज्ञानिक तरीकों को अपनाने वाले प्रगतिशील किसान हैं। पूर्व में सामान्य बोवनी पद्धतियों और अनिश्चित मानसूनी बारिश के कारण अत्यधिक जलभराव से सोयाबीन की फसल को नुकसान पहुँचने तथा उत्पादन प्रभावित होने की चिंता बनी रहती थी। सीमित संसाधनों के बीच

फसल की सुरक्षा और बेहतर पैदावार प्राप्त करना उनके लिए एक बड़ी चुनौती थी। कृषि विभाग के आत्मा कार्यक्रम के ब्लॉक तकनीकी प्रबंधक रघुवीर सिंह यादव एवं विशेषज्ञों के सतत मार्गदर्शन में सोबरन सिंह धाकड़ ने उन्नत कृषि पद्धतियों और किस्मों की जानकारी प्राप्त की। विभाग के परामर्श से उन्होंने अपने एक बीघा खेत में सोयाबीन लगाने का निर्णय लिया। इसके साथ ही कृषि विभाग की अनुशंसित रिज एंड फरो (मेढ़ एवं नाली) पद्धति से बोवनी करने की तकनीक को अपनाया।

तकनीकी मार्गदर्शन के अनुसार सोबरन सिंह ने 12 से 15 किलोग्राम प्रति बीघा की दर से बीज का उपयोग किया तथा कतार से कतार की दूरी 1.5 फीट (18 इंच) रखी। इस नवाचार के सुखद परिणाम सामने आए। अत्यधिक बारिश के दौरान भी नालियों के माध्यम से अतिरिक्त पानी खेत से बाहर निकल गया, जिससे जलभराव नहीं हुआ और फसल पूरी तरह सुरक्षित रही। पौधे स्वस्थ रहे, शाखाओं का बेहतर विकास हुआ और मजबूत दाने बनने से उत्पादन क्षमता में उल्लेखनीय वृद्धि हुई।

सामाजिक प्रभाव व प्रेरणा

सोबरन सिंह धाकड़ द्वारा 1 बीघा भूमि में अपनाई गई इस रिज एंड फरो पद्धति की सफलता आसपास के अंचल के अन्य किसानों के लिए भी प्रेरणास्रोत बन गई है। जलभराव से फसल को बचाने और कम लागत में बेहतर पैदावार लेने का उनका यह मॉडल क्षेत्र के अन्य कृषकों को भी आधुनिक व वैज्ञानिक खेती की ओर प्रेरित कर रहा है।

प्रशासनिक सराहना एवं धन्यवाद

कृषि विभाग के अधिकारियों एवं विशेषज्ञों ने सोबरन धाकड़ के खेत का अवलोकन कर उनके द्वारा अपनाई गई उन्नत तकनीक और समर्पण की सराहना की। कृषक सोबरन सिंह धाकड़ ने कृषि विभाग एवं जिला प्रशासन द्वारा दिए गए समयोचित मार्गदर्शन और तकनीकी सहयोग के प्रति अपना आभार व्यक्त किया है।

सांड टंकी पर और व्यवस्था नीचे मुस्तेद

ज़नाब अपनी समस्याओं को सुलझाने के लिए या उसका समाधान खोजने के लिए सिर्फ मनुष्य ही नहीं जानवर भी आजकल टंकी पर चढ़ने का कार्यक्रम करने लगे हैं हालांकि यह उनके लिए रिस्की है। यह तो अच्छा हुआ कि वह टंकी जर्जर नहीं थी। अन्यथा कुछ का कुछ हो जाता। पानी की टंकी पर सिर्फ 卐शोले卐 फिल्म के वीरु का बसंती को पाने के लिए चढ़ना सबको आज भी याद है। पानी की टंकी पर मानव मात्र के चढ़ने का एकाधिकार अब खत्म हो गया है। लेकिन कभी-कभी मूक प्राणी भी अपने मन की करते हैं, यह बात अलग है कि वह हमको समझ में नहीं आता और न आएगा। अब यह तो मूक प्राणियों की भाषा समझने वाला ही बता सकता है कि सांड टंकी पर क्यों चढ़ा?

श्योपुर के ददूनी गांव में एक सांड 60 फीट ऊंची पानी की टंकी पर जा चढ़ा। नीचे गांव वाले खड़े थे, ऊपर सांड था और बीच में एक ऐसा सवाल था-卐अब इसे नीचे कौन उतारेगा?

असल में सांड को शायद नीचे की दुनिया से कुछ शिकायत रही होगी। सोचा होगा-卐जब सबको ऊपर जाने की इतनी जल्दी है, तो मैं भी देखूं कि ऊपर पहुंचकर कैसा लगता है!卐 लेकिन ऊपर पहुंचने के बाद उसे पता चला कि ऊंचाई हासिल करना आसान है, वापसी की व्यवस्था थोड़ी मुश्किल है। यारों 42 घंटे तक सांड टंकी पर डटा रहा। नीचे लोग तमाशा देखते रहे, सलाह देते रहे और उम्मीद करते रहे कि सांड खुद समझदारी दिखाएगा। सांड ने भी शायद तय कर लिया था कि 卐जब मामला इतना चर्चित हो गया है, तो अब बिना सरकारी इंतजाम के नीचे क्यों? उतरूं?

आखिरकार पुलिस, पशुपालन विभाग और प्रशासन की टीम पहुंची। क्रेन मंगाई गई और करीब दो घंटे के ऑपरेशन के बाद सांड को सुरक्षित नीचे उतार लिया गया। इस पूरे घटनाक्रम में एक दिलचस्प बात यह रही कि सांड ऊपर था, लेकिन असली परीक्षा नीचे खड़े तंत्र की हो रही थी। लोकतंत्र में भी कुछ ऐसा ही है। कोई समस्या छोटी हो तो लोग उसे नजरअंदाज कर देते हैं। समस्या थोड़ी बड़ी हो जाए तो चर्चा शुरू होती है। अपनी तो इतनी ऊंचाई सुनकर ही पुंगी बज जाती है। जब वह 60 फीट ऊपर चढ़ जाए, तब बैठक, निरीक्षण, टीम, योजना और ऑपरेशन सब शुरू हो जाते हैं। हालांकि यह भी मानना पड़ेगा कि प्रशासन ने आखिरकार मोर्चा संभाला और सांड को सुरक्षित नीचे उतार लिया। यानी व्यवस्था पूरी तरह बेबस भी नहीं है- बाबू, कुछ भी कहो मुस्तेदी बड़ी जबरदस्त है। बस कभी-कभी उसे समस्या की ऊंचाई देखकर अपनी ऊंचाई तय करनी पड़ती है। इस सांड के रेस्क्यू ने एक और राजनीतिक-सा, मगर गैर-दलीय संदेश दिया-ऊपर पहुँच जाना उपलब्धि हो सकती है, लेकिन नीचे सुरक्षित लौटाना असली प्रबंधन है।

भइये सांड अब जमीन पर है। टंकी खाली है। क्रेन वापस जा चुकी है। गांव वालों की चिंता भी खत्म हो गई। लेकिन इस घटना ने एक मजेदार सवाल जरूर छोड़ दिया हैं, अगर एक सांड को 60 फीट की ऊंचाई से नीचे उतारने में 42 घंटे लग सकते हैं, तो जो समस्याएं वर्षों से व्यवस्था की ऊंची टंकियों पर बैठी हैं, उनके लिए क्रेन कब आएगी? फिलहाल सांड ने तो अपना काम कर दिया। वो ऊपर चढ़ा, सबका ध्यान खींचा और सुरक्षित नीचे भी आ गया। अब बारी हमारी है कि हम उससे कम से कम इतना तो सीखें कि ऊंचाई चाहे कितनी भी हो, नीचे उतरने का रास्ता पहले से पता होना चाहिए। अन्यथा सबको क्रेन उपलब्ध हो जाए ये जरूरी नहीं!

संजय एम तराणेकर
(कवि, लेखक व समीक्षक)

कहानी बदलाव की

संघर्ष से सम्मान तक: चिरौंजी लाल राठौड़ को नियमित पेंशन मिलने से दूर हुई आर्थिक निर्भरता

शिवपुरी, जीएनएस। जिले की ग्राम पंचायत गुगरीपुरा के निवासी श्री चिरौंजी लाल राठौड़ एक बेहद साधारण ग्रामीण परिवार से आते हैं। बढ़ती उम्र और शारीरिक कमजोरियों के कारण अब वे दैनिक मजदूरी या मेहनत-मजदूरी का कार्य करने में सक्षम नहीं रहे। आय का कोई स्थायी साधन न होने के कारण उन्हें अपनी छोटी-छोटी दैनिक आवश्यकताओं, व्यक्तिगत जरूरतों और बीमारियों की दवाइयों के लिए भी दूसरों पर निर्भर रहना पड़ता था। इस आर्थिक तंगी और बेबसी ने उनके जीवन में संघर्ष और अनिश्चितता ला दी थी।

ऐसे कठिन समय में शासन की ''इंदिरा गांधी राष्ट्रीय वृद्धावस्था पेंशन योजना'' उनके जीवन में एक बड़ा सहारा बनकर आई। योजना के संबंध में जानकारी प्राप्त होने के बाद पंचायत एवं सामाजिक न्याय विभाग के सहयोग से उनका आवेदन पंजीकृत किया गया और वे पेंशन योजना से जुड़ गए। इस शासकीय योजना के माध्यम से उन्हें प्रतिमाह नियमित रूप से आर्थिक सहायता (पेंशन राशि) मिलने लगी, जिसने उनके जीवन को एक नई दिशा और संबल प्रदान किया।

शासकीय पेंशन योजना से मिलने वाली राशि का उपयोग श्री चिरौंजी लाल अपनी दवाइयां खरीदने, स्वास्थ्य संबंधी देखभाल और दैनिक जीवन की अनिवार्य जरूरतों को पूरा करने में कर रहे हैं। अब उन्हें अपनी बुनियादी जरूरतों के लिए किसी अन्य के सामने हाथ नहीं फैलाना पड़ता। इस नियमित वित्तीय सहयोग ने उनके जीवन में बड़ी राहत पहुँचाते हुए उनकी आर्थिक आत्मनिर्भरता को सुनिश्चित किया है।

सामाजिक प्रभाव एवं स्वाभिमान: पेंशन योजना के लाभ ने न केवल चिरौंजी लाल को वित्तीय रूप से राहत पहुँचाई, बल्कि उनके सामाजिक जीवन और आत्म-सम्मान में भी भारी वृद्धि की है। श्री चिरौंजी लाल कहते हैं, ''अब छोटे-छोटे कामों और अपनी जरूरतों के लिए मुझे दूसरों के सामने हाथ नहीं फैलाना पड़ता। इससे मेरा आत्मविश्वास पुनः लौटा है और जिंदगी में एक सुरक्षा व सम्मान का एहसास हुआ है।'' उनकी यह कहानी गाँव के अन्य वरिष्ठ नागरिकों के लिए भी शासकीय योजनाओं के प्रति विश्वास जगाने वाली है।

प्रशासनिक संवेदनशीलता एवं आभार: जिला प्रशासन द्वारा वृद्धजनों के कल्याण हेतु सामाजिक सुरक्षा योजनाओं का लाभ अंतिम छोर के पात्र व्यक्तियों तक प्राथमिकता से पहुँचाया जा रहा है। श्री चिरौंजी लाल राठौड़ ने बुजुर्गों की देखभाल, आर्थिक सुरक्षा और सम्मानजनक जीवन सुनिश्चित करने के लिए चलाई जा रही इस कल्याणकारी योजना हेतु सरकार और जिला प्रशासन का सहृदय धन्यवाद व आभार व्यक्त किया है।

मेगा ड्राइव अभियान: पैरालीगल वालंटियर्स ने ग्राम लखनगवा में घर-घर जाकर दी 13 कल्याणकारी योजनाओं की जानकारी

शिवपुरी, जीएनएस। राष्ट्रीय विधिक सेवा प्राधिकरण नई दिल्ली एवं राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण जबलपुर के आदेशानुसार चलाए जा रहे 60 दिवसीय मेगा ड्राइव अभियान के तहत रविवार को ग्राम लखनगवा में डोर-टू-डोर संपर्क अभियान आयोजित किया गया। यह कार्यवाई प्रधान जिला न्यायाधीश एवं अध्यक्ष जिला विधिक सेवा प्राधिकरण शिवपुरी श्री राजेन्द्र प्रसाद सोनी के निर्देशन तथा जिला विधिक सेवा प्राधिकरण की सचिव श्रीमती रंजना चतुर्वेदी के मार्गदर्शन में संपन्न हुई। चिह्नित ग्राम पंचायत हातौद के अंतर्गत आने वाले ग्राम लखनगवा में पैरालीगल वालंटियर श्री देवेंद्र कुशवाहा एवं श्री नीरू रावत द्वारा घर-घर जाकर लगभग 60 ग्रामीणों से सीधा संवाद किया गया। इस दौरान ग्रामीणों को विधिक सेवा प्राधिकरण की मेगा ड्राइव के अंतर्गत चिह्नित 13 प्रमुख योजनाओं के साथ-साथ शासन द्वारा संचालित अन्य जन-कल्याणकारी योजनाओं की विस्तृत जानकारी दी गई। जागरूकता

विधिक साक्षरता और अभियान के साथ-साथ ग्रामीणों की समस्याओं के समाधान हेतु व्यावहारिक पहल भी की गई। संपर्क के दौरान जिन ग्रामीणों के जन्म प्रमाण पत्र में त्रुटियां थीं अथवा जिन्हें पात्रता पर्ची की आवश्यकता थी, उनके आवेदन मौके पर ही तैयार कराए गए। इन आवेदनों को त्वरित निराकरण हेतु संबंधित शासकीय विभागों में भिजवा दिया गया है, ताकि हितग्राहियों को योजनाओं का समय पर लाभ मिल सके।

शासकीय योजनाओं के लाभ पर जोर

अभियान का मुख्य उद्देश्य ग्रामीण एवं वंचित वर्गों तक विधिक सहायता और शासकीय कल्याणकारी योजनाओं की पहुंच सुनिश्चित करना है। जिला विधिक सेवा प्राधिकरण द्वारा जिले के विभिन्न ग्रामीण अंचलों में निरंतर इस प्रकार की गतिविधियों का संचालन किया जा रहा है, जिससे आमजन जागरूक होकर अपने अधिकारों और सरकारी सुविधाओं का पूरा लाभ उठा सकें।

कहानी बदलाव की: आयुष्मान कार्ड से हुआ बच्ची का इलाज, आयुष्मान भारत योजना बनी परिवार का सहारा

शिवपुरी, जीएनएस। शिवपुरी जिले की ग्राम पंचायत हातौद की निवासी श्रीमती गीता आदिवासी एक सामान्य ग्रामीण परिवार से आती हैं। सीमित संसाधनों और आर्थिक विषमताओं के कारण किसी भी गंभीर बीमारी का इलाज कराना अत्यंत कठिन चुनौती होती है। ऐसे ही कठिन समय में आयुष्मान कार्ड से इलाज मिलने पर परिवार को बड़ा संबल मिलता है।

गीता आदिवासी बताती हैं कि आयुष्मान कार्ड होने से अब बीमारी के इलाज का बोझ नहीं रहेगा। गीता ने अपने पड़ोस का का ऐसा ही अनुभव साझा किया और बताया कि पड़ोस में रहने वाली एक मासूम बच्ची के दिल में जन्मजात छेद होने की समस्या थी। आर्थिक

स्थिति कमजोर होने के कारण परिवार के सामने बच्ची के इलाज का बड़ा संकट खड़ा हो गया था, जिससे मासूम का जीवन खतरे में पड़ गया था।

इस गंभीर परिस्थिति में महत्वाकांक्षी ''आयुष्मान भारत योजना'' गरीब परिवार के लिए जीवनदायिनी साबित हुई। योजना के तहत 5 लाख रुपये तक के निःशुल्क एवं उच्चस्तरीय इलाज किया जाता है।

आयुष्मान कार्ड की मदद से मासूम बच्ची का अस्पताल में पूरी तरह निःशुल्क और गुणवत्तापूर्ण इलाज कराया गया। योजना के कारण गरीब परिवार पर कोई आर्थिक बोझ नहीं पड़ा और बच्ची को नया जीवन मिला। आज वह बच्ची पूरी तरह स्वस्थ और सुरक्षित है। गीता आदिवासी बताती हैं कि यदि शासन की यह आयुष्मान भारत योजना नहीं होती, तो आर्थिक तंगी के कारण उस मासूम की जान बचा पाना मुश्किल था। इस घटना के बाद अब गीता और जागरूक हो गई हैं। गरीब व वंचित परिवारों को आयुष्मान कार्ड बनवाने और शासकीय योजनाओं का लाभ उठाने के लिए लगातार प्रेरित करती हैं। मासूम बच्ची को नया जीवन मिलने और अपने गाँव में गरीब परिवारों को स्वास्थ्य सुरक्षा कवच मिलने पर गीता आदिवासी ने अत्यंत प्रसन्नता व्यक्त की है। उन्होंने समय पर निःशुल्क इलाज उपलब्ध कराने और गरीबों के कल्याण के लिए चलाई जा रही इस योजना हेतु प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी और मध्यप्रदेश सरकार का हृदय से धन्यवाद व आभार व्यक्त किया है।

निष्पक्षता-विश्वसनीयता एवं जनहित का संवाहक
श्रमसाधना

संपादकीय

भारत को डराया नहीं जा सकता, यह नया भारत है

हाल ही में अमेरिकी संसद द्वारा भारत एवं चीन सहित कुछ अन्य देशों से अमेरिका को होने वाले विभिन्न उत्पादों के निर्यात पर 100 प्रतिशत अतिरिक्त टैरिफ लगाने सम्बंधी कानून को स्वीकृति प्रदान कर दी गई है, क्योंकि, ये देश रूस से कच्चे तेल का भारी मात्रा में आयात कर रहे हैं। अमेरिका के अनुसार, इन देशों द्वारा रूस से कच्चे तेल के आयात के चलते रूस को यूक्रेन के साथ युद्ध करने की आर्थिक शक्ति प्राप्त हो रही है। जबकि, यूरोपीयन देश एवं अमेरिका स्वयं रूस से गैस एवं अन्य उत्पादों का भारी मात्रा में आयात कर रहे हैं। अर्थात, इन देशों द्वारा रूस से अन्य पदार्थों के आयात करने से रूस को कोई आर्थिक ताकत प्राप्त नहीं होती है, केवल भारत एवं चीन सहित कुछ अन्य देशों द्वारा रूस से कच्चे तेल के आयात से रूस को आर्थिक शक्ति प्राप्त होती है। अमेरिका का यह दोहरा चरित्र अब पूरे विश्व के सामने प्रदर्शित हो रहा है। अमेरिका को अब यह समझ लेना चाहिए कि भारत से अमेरिका को होने वाले विभिन्न उत्पादों के निर्यात पर 100 प्रतिशत का अतिरिक्त टैरिफ लगाने का डर दिखा कर एवं भारत को दबाव में लाकर अमेरिका भारत से अपने मनमाफिक निर्णय करवा लेगा, तो आज की बदली हुई परिस्थितियों के बीच यह सम्भव होता हुआ दिखाई नहीं दे रहा है। अमेरिका एवं पूरे विश्व के सामने अब एक नया भारत खड़ा है। अमेरिका दरअसल चाहता है कि भारत उसके कृषि उत्पादों के लिए अपने बाजार खोले ताकि वह भारत को अपने कृषि एवं डेयरी उत्पाद निर्यात कर सके। यदि भारत अमेरिका के इस दबाव में आता है तो भारतीय किसानों पर इसका विपरीत प्रभाव पड़ेगा और केंद्र सरकार भारत के किसानों के हितों की बलि किसी भी कीमत पर देने को तैयार नहीं है। आज, संभवत- अमेरिका को भारत की अधिक आवश्यकता है क्योंकि भारत पूरे विश्व में सबसे बड़ी आबादी वाला देश बन गया है, जिसके कारण भारत पूरे विश्व में सबसे युवा देशों की श्रेणी में उच्च स्थान रखता है। साथ ही, भारत आज विश्व में विभिन्न उत्पादों का सबसे बड़ा उपभोक्ता देश बन गया है एवं आगे आने वाले समय में भारत की यही स्थिति लम्बे समय तक बनी रहने वाली है। भारत आज विश्व के अन्य उत्पादक देशों के लिए सबसे बड़ा बाजार है। भारत का सकल घरेलू उत्पाद आज विश्व में बड़े देशों के बीच सबसे अधिक तेज गति से आगे बढ़ता हुआ दिखाई दे रहा है। हाल ही में जापान ने भारत की सार्वभौमिक क्रेडिट रेटिंग को अपग्रेड किया है। और तो और, अब अमेरिकी क्रेडिट रेटिंग एजेन्सियां भी भारत की सार्वभौमिक क्रेडिट रेटिंग में सुधार करने पर विचार करने को मजबूर हो रही हैं। हाल ही में मूडीज ने वर्ष 2026 में भारत के सकल घरेलू उत्पाद में होने वाली वृद्धि दर को 6 प्रतिशत से बढ़ाकर 7 प्रतिशत कर दिया है। साथ ही, जेफरीज ने भी अपने पूर्व अनुमान 6.7 प्रतिशत को सुधारकर 7 प्रतिशत कर दिया है। भारतीय रिजर्व बैंक ने भारत की आर्थिक विकास दर के अनुमान को 6.7 प्रतिशत कर दिया है, जबकि भारत ने वित्तीय वर्ष 2026-27 की प्रथम तिमाही में 7.8 प्रतिशत की आर्थिक विकास दर हासिल की है। भारत के अपने विदेशी उत्पादों के लिए नए बाजार तलाशने सम्बंधित प्रयास आज सफल होते हुए दिखाई दे रहे हैं। क्योंकि, अगस्त 2026 का माह भारतीय निर्यातकों के लिए बहुत शानदार रहा है। वैश्विक स्तर पर कई प्रकार की चुनौतियों के चलते भी भारत से विभिन्न उत्पादों के निर्यात में 26.12 प्रतिशत की आकर्षक वृद्धि दर्ज हुई है।

प्रान्तीय कार्यालय : 76 शबरी कॉम्पलेक्स, एम.पी. नगर जोन-2 भोपाल, फोन : 0755-2579530
प्रान्तीय ब्यूरो प्रमुख : एल.एन. तवर, 9827781209
प्रान्तीय ब्यूरो : डॉ. जानकी अहिरवार 9406580345
Email:shramsadhnagwl@gmail.com

रंगों में पंजाब : सिंधु घाटी से आधुनिकता तक

डॉ. विजय गर्ग

कला मानव सभ्यता की सबसे प्राचीन और प्रभावशाली अभिव्यक्तियों में से एक है। लिखित इतिहास के विकसित होने से बहुत पहले ही मनुष्य ने रेखाओं, आकृतियों, प्रतीकों और रंगों के माध्यम से अपने विचारों, भावनाओं, विश्वासों तथा आसपास की दुनिया को व्यक्त करना शुरू कर दिया था। पंजाब की चित्रकला का इतिहास भी केवल चित्र बनाने की कहानी नहीं है, बल्कि बदलते समाज, धार्मिक परंपराओं, राजसी संस्कृति, लोकजीवन, प्रकृति, विरासत, विभाजन, प्रवास और आधुनिक विचारों की एक लंबी यात्रा है।

पंजाब से जुड़े व्यापक भौगोलिक क्षेत्र में दक्षिण एशिया की प्राचीन सभ्यताओं के महत्वपूर्ण केंद्र रहे हैं। सिंधु घाटी सभ्यता से जुड़े हड़प्पा जैसे स्थलों से प्राप्त मुहरें, मिट्टी के बर्तन, मूर्तिकाएँ, आभूषण और सजावटी वस्तुएँ प्राचीन मनुष्य की विकसित कलात्मक सोच का प्रमाण देती हैं। पशुओं, पौधों, ज्यामितीय आकृतियों और विभिन्न प्रतीकों का सुंदर प्रयोग यह दर्शाता है कि उस समय के लोगों में रूप, अनुपात और डिजाइन की गहरी समझ थी।

यह कहना ऐतिहासिक रूप से उचित नहीं होगा कि सिंधु घाटी की कला को आधुनिक अर्थों में ÷पंजाबी चित्रकला÷ कहा जाए। लेकिन पंजाब क्षेत्र की यह पुरातात्त्विक विरासत बाद की कलात्मक परंपराओं की महत्वपूर्ण सांस्कृतिक पृष्ठभूमि अवश्य बनती है। प्राचीन मुहरों और बर्तनों पर बने प्रतीक यह बताते हैं कि दृश्य चिह्न पहचान, विश्वास और सामाजिक अर्थों को व्यक्त करने का माध्यम थे।

धर्म, आस्था और कला

पंजाब की कलात्मक यात्रा में धर्म और आस्था की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। हिंदू, बौद्ध, जैन, इस्लामी और बाद में सिख परंपराओं ने अलग-अलग कालखंडों में इस क्षेत्र की कला को प्रभावित किया।

धार्मिक संस्थानों और स्थलों ने मूर्तिकला, हस्तलिखित ग्रंथों की सजावट, वास्तुकला और चित्रकला के विकास के लिए अवसर प्रदान किए। चित्र अक्सर धार्मिक कथाओं और घटनाओं को लोगों तक पहुँचाने का माध्यम बने। इस प्रकार कला केवल सौंदर्य की वस्तु नहीं रही, बल्कि ज्ञान और स्मृति को सुरक्षित रखने का साधन भी बनी।

सिख धर्म के उदय और विकास के साथ पंजाब में एक नई सांस्कृतिक और दृश्य परंपरा विकसित हुई। सिख गुरुओं, सिख इतिहास, ऐतिहासिक स्थलों, योद्धाओं और महत्वपूर्ण घटनाओं से जुड़े चित्रों ने पंजाब की सामूहिक स्मृति को दृश्य रूप प्रदान किया।

मुगल और क्षेत्रीय प्रभाव

मुगल काल का उत्तर भारत की चित्रकला पर गहरा प्रभाव पड़ा। मुगल कलाकारों ने चित्रांकन में सूक्ष्मता, व्यक्तिचित्र, दरबारी दृश्य, प्रकृति, पौधों और पशुओं के अध्ययन को नई ऊँचाई दी। उनकी कला में बारीक रेखाओं, कोमल रंगों और विस्तृत चित्रण की विशेषता दिखाई देती है।

पंजाब अपनी भौगोलिक स्थिति के कारण मध्य एशिया, फारसी क्षेत्र और भारतीय उपमहाद्वीप की विभिन्न संस्कृतियों के संपर्क में रहा। इसलिए यहाँ की कला में स्थानीय और बाहरी प्रभावों का सुंदर मेल दिखाई देता है।

इन प्रभावों ने किसी एक शैली को जन्म नहीं दिया, बल्कि एक व्यापक कलात्मक वातावरण तैयार किया, जिसमें स्थानीय परंपराओं के साथ नई तकनीकें और सौंदर्यबोध विकसित हुए। प्राकृतिक दृश्य, इमारतें, फूल, पक्षी, पशु और मानव आकृतियाँ कलाकारों के महत्वपूर्ण विषय बने।

पहाड़ी और सिख चित्रकला

पंजाब से लगे पहाड़ी क्षेत्रों में लघु चित्रकला की कई महत्वपूर्ण शैलियाँ विकसित हुईं। व्यापक पहाड़ी चित्रकला परंपरा में धार्मिक कथाओं, प्रेम, प्रकृति, काव्य और मानवीय भावनाओं को अत्यंत सुंदरता से प्रस्तुत किया गया।

कांगड़ा शैली में प्राकृतिक दृश्यों और मानवीय भावनाओं का अत्यंत कोमल तथा काव्यात्मक चित्रण मिलता है। राधा-कृष्ण, प्रेम-काव्य और पौराणिक कथाएँ इसके प्रमुख विषय रहे।

दूसरी ओर, सिख चित्रकला ने सिख गुरुओं, सिख योद्धाओं, ऐतिहासिक घटनाओं और राजसी जीवन को चित्रों में संरक्षित किया। ये चित्र केवल व्यक्तियों के चित्र नहीं थे, बल्कि इतिहास, वेशभूषा, हथियारों, वास्तुकला और सामाजिक जीवन के दृश्य दस्तावेज भी बने।

महाराजा रणजीत सिंह के समय लाहौर एक महत्वपूर्ण राजनीतिक और सांस्कृतिक केंद्र बना। दरबारी कला में शासकों, सैनिकों, दरबारों और महत्वपूर्ण घटनाओं के चित्र बनाए गए। इसी दौर में यूरोपीय कलात्मक प्रभाव भी पंजाब तक पहुँचे।

लाहौर- कला का महत्वपूर्ण केंद्र

पंजाब के सांस्कृतिक इतिहास में लाहौर का विशेष स्थान है। ऐतिहासिक इमारतों, उद्यानों, शिक्षण संस्थानों, प्रकाशन और कलात्मक गतिविधियों ने इस शहर को एक महत्वपूर्ण बौद्धिक तथा कलात्मक केंद्र बनाया।

औपनिवेशिक काल में पश्चिमी अकादमिक कला-तकनीकों और औपचारिक कला-शिक्षा का प्रभाव बढ़ा। ड्राइंग, परिप्रेक्ष्य, यथार्थवादी व्यक्तिचित्र और नई तकनीकें कलाकारों के काम का हिस्सा बनने लगीं।

इस दौर में परंपरा और आधुनिकता के बीच एक नया संवाद शुरू हुआ। कलाकारों को अपनी स्थानीय कलात्मक परंपराओं और पश्चिमी कला-विचारों के बीच संतुलन बनाना पड़ा। इसी संवाद ने आधुनिक कला की नई दिशाओं के लिए आधार तैयार किया।

विभाजन और पंजाब की बदलती कला

1947 का विभाजन पंजाब के इतिहास की सबसे बड़ी घटनाओं में से एक था। पंजाब राजनीतिक और भौगोलिक रूप से दो हिस्सों में विभाजित हुआ। बड़े पैमाने पर हुए पलायन और विस्थापन ने लोगों के जीवन, परिवारों, शहरों और सांस्कृतिक संबंधों को बदल दिया।

नशे के वैश्विक नेटवर्क पर निर्णायक प्रहार की तैयारी

वैश्विक स्तरपर आज नशाखोरी केवल किसी एक देश,राज्य या समाज की समस्या नहीं रह गई है, बल्कि यह वैश्विक सुरक्षा,सार्वजनिक स्वास्थ्य, युवा शक्ति, सामाजिक स्थिरता और अर्थव्यवस्था के सामने खड़ी बहुआयामी चुनौती बन चुकी है।मादक पदार्थों का अवैध व्यापार सीमाओं,समुद्री मार्गों और आधुनिक संचार साधनों को पार करते हुए अंतरराष्ट्रीय अपराध जगत से जुड़ रहा है। मैं एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानी गोंदिया महाराष्ट्र यह मानता हूं क़ि इसका प्रभाव केवल नशे का सेवन करने वाले व्यक्ति तकसीमित नहीं र ह ता , ब ल्कि परिवार,शिक्षा,रोजगार,कानून-व्यवस्था और सामाजिक विकास की पूरी संरचना को प्रभावित करता है।भारत ने इस चुनौती के विरुद्ध जन- जागरूकता से लेकर कठोर प्रवर्तन तक अनेक स्तरों पर प्रयास प्रारंभ किए हैं।इसी व्यापक रणनीति के बीच नई दिल्ली में 22 और 23 सितंबर 2026 को राज्यों और केंद्रशासित प्रदेशों के मादक पदार्थ विरोधी कार्यबल प्रमुखों का तीसरा राष्ट्रीय सम्मेलन शुरू है।केंद्रीय गृह मंत्री द्वारा उद्घाटित इस सम्मेलन में 36 राज्यों और केंद्रशासित प्रदेशों के कार्यबल प्रमुखों के साथ संबंधित सरकारी विभागों तथा अन्य हितधारकों के प्रतिनिधि शामिल होकर चर्चा कर रहे हैं।

साथियों, इस सम्मेलन की मूल भावना ÷संयुक्त संकल्प, साझा जिम्मेदारी÷ रखी गई है,जो अपने आप में इस समस्या की प्रकृति को स्पष्ट करती है।मादक पदार्थों का जाल किसी एक विभाग की कार्रवाई से समाप्त नहीं किया जा सकता।इसके लिए पुलिस, खुफिया तंत्र, सीमा सुरक्षा,वित्तीय जांच,स्वास्थ्य व्यवस्था,शिक्षा तंत्र, न्यायिक प्रक्रिया और स्थानीय प्रशासन के बीच लगातार समन्वय आवश्यक है। सरकार द्वारा जारी जानकारी के अनुसार सम्मेलन में मादक पदार्थ नियंत्रण के लिए 2026- 2029 के दृष्टि दस्तावेज में निर्धारित लक्ष्यों की प्रगति कीसमीक्षा की जा रही है। साथ ही मादक पदार्थों की आपूर्ति घटाने, मांग कम करने तथा इनके कारण होने वाली क्षति को कम करने की रणनीतियों पर भी विचार किया जा रहा है। साथियों,नशे के विरुद्ध लड़ाई का पहला महत्वपूर्ण पक्ष जन-जागरूकता है।किसी भी समाज में यदि युवा पीढ़ी को नशे के दुष्परिणामों के प्रति समय रहते जागरूक किया जाए,परिवारों को संवेदनशील बनाया जाए और विद्यालयों तथा महाविद्यालयों में स्वस्थ जीवनशैली को बढ़ावा दिया जाए तो नशे की मांग को कम करने में सहायता मिल सकती है। भारत में नशामुक्त भारत अभियान जैसे प्रयास इसी दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। लेकिन केवल जागरूकता से समस्या का पूर्ण समाधान संभव नहीं है। यदि एक ओर समाज को नशे से दूर रहने का संदेश दिया जाए और दूसरी ओर अवैध तस्करी का नेटवर्क लगातार नई राहें खोजता रहे, तो समस्या का मूल स्त्रोत बना रहेगा।इसलिए मांग को कम करने के साथ आपूर्ति के स्त्रोत, तस्करी के मार्ग, वित्तीय नेटवर्क और संगठित आपराधिक संरचनाओं पर भी समान रूप से कार्रवाई आवश्यक है।

साथियों, यही कारण है कि नई दिल्ली सम्मेलन का ध्यान केवल पारंपरिक तस्करी तक सीमित नहीं है। सम्मेलन के तकनीकी सत्रों में मादक पदार्थ तस्करी के संगठित गिरोहों को समाप्त करने, कृत्रिम रूप से तैयार किए जाने वाले नशीले पदार्थों और गुप्त प्रयोगशालाओं से निपटने, अवैध खेती रोकने तथा अंधकारमय अंतरजाल और आभासी मुद्राओं के माध्यम से होने वाली तस्करी की जांच जैसे विषय शामिल हैं। यह बदलाव बताता है कि मादक पदार्थों का अपराध जगत भी तकनीकी साधनों का उपयोग कर रहा है और कानून-प्रवर्तन संस्थाओं को उसी गति से अपनी क्षमता विकसित करनी होगी।विशेष रूप से कृत्रिम नशीले पदार्थों का बढ़ता खतरा प्रशासन के लिए नई चुनौती प्रस्तुत करता है। पारंपरिक मादक पदार्थों की तुलना में कृत्रिम पदार्थों का निर्माण छोटे और छिपे हुए स्थानों पर भी किया जा सकता है। इनके निर्माण में प्रयुक्त रासायनिक पूर्ववर्ती पदार्थों की निगरानी इसलिए महत्वपूर्ण हो जाती है। यदि इन पदार्थों की वैध औद्योगिक आपूर्ति और अवैध उपयोग के बीच प्रभावी निगरानी तंत्र विकसित किया जाए,तो अवैध उत्पादन की श्रृंखला को प्रारंभिक स्तर पर ही बाधित किया जा सकता है। इसी दृष्टि से सम्मेलन में पूर्ववर्ती पदार्थों तथा कृत्रिम नशीले पदार्थों के नियंत्रण को अलग रणनीतिक स्तंभ के रूप में सटीकता से रखा गया है।

साथियों,दूसरी बड़ी चुनौती अवैध खेती और ग्रामीण क्षेत्रों में विकसित होने वाले तस्करी तंत्र की है। केवल फसल नष्ट कर देना पर्याप्त नहीं हो सकता क्योंकि यदि किसान या स्थानीय समुदाय के सामने वैध और टिकाऊ आजीविका का विकल्प उपलब्ध न हो तो अवैध खेती किसी अन्य क्षेत्र में स्थानांतरित होने का जोखिम रहता है। इसलिए अवैध खेती रोकने के साथ वैकल्पिक फसलों, स्थानीय रोजगार और आर्थिक अवसरों को बढ़ावा देने की रणनीति भी आवश्यक है।इस सम्मेलन के तकनीकी विचार-विमर्श में अवैध खेती और वैकल्पिक फसलों को शामिल किया जाना इसी व्यापक दृष्टिकोण की ओर सटीकता से संकेत करता है। साथियों,नशे के अंतरराष्ट्रीय नेटवर्क को कमजोर करने के लिए आर्थिक प्रहार भी महत्वपूर्ण है। तस्करी से अर्जित धन जब संपत्ति, व्यवसाय, हवाला व्यवस्था या अन्य वित्तीय माध्यमों में प्रवेश करता है, तब यह अपराध की अगली पीढ़ी को आर्थिक शक्ति प्रदान करता है।

सफलता की कहानी : देश सेवा से उद्यम सेवा तक – प्रधानमंत्री सूक्ष्म खाद्य उद्यम उन्नयन योजना ने बनाया सफल उद्यमी

भिण्ड, जीएनएस। भिण्ड शहर के चतुर्वेदी नगर निवासी श्री संतोष सिंह प्रधानमंत्री सूक्ष्म खाद्य उद्यम उन्नयन योजना पीएमएफएमई अंतर्गत प्राप्त सहायता के माध्यम से सफल उद्यमी बने हैं। भारतीय सेना में हवलदार के पद पर 17 वर्षों तक सेवा देने वाले श्री सिंह ने देश-सेवा के बाद जिले में उद्यम-सेवा के जज्बे के साथ खाद्य प्रसंस्करण के क्षेत्र में कदम रखा। वैष्णवी आयल मिल के माध्यम से ओडीओपी उत्पाद - सरसो का प्रसंस्करण कर वे न केवल 10 लाख की वार्षिक आय प्राप्त कर रहे हैं बल्कि पांच अन्य स्थानीय व्यक्तियों को रोजगार भी दे रहे है।

शुरुआती दिनों में वैष्णवी आयल मिल की सीमित संसाधनों के कारण उत्पादन क्षमता कम थी और उत्पाद को बड़ा बाजार नहीं मिल पा रहा था। पीएमएफएमई योजना अंतर्गत आवेदन करने पर योजना के तहत उन्हें सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया से 13.50 लाख रुपए का ऋण और 5.25 लाख रुपये का अनुदान प्राप्त हुआ। इस

सहायता से उन्होंने मिल के उन्नयन हेतु आधुनिक एक्सपेलर, फिल्टर और मोटर मशीनें लगाई जिससे उत्पादन क्षमता में बढ़ोतरी हुई। आज वे ग्रामीण क्षेत्रों से किसानों से सीधे सरसों खरीद कर शुद्ध सरसों का तेल निकालते हैं और उसे खुला एवं टीन के डिब्बों में पैक कर स्थानीय बाजार में बेचते हैं।

श्री सिंह का कहना है कि पीएमएफएमई योजना अत्यंत लाभकारी है जिसके अंतर्गत सहायता प्राप्त कर युवा अपना उद्यम स्थापित कर आत्मनिर्भर बन सकते हैं। श्री सिंह अपने खाद्य प्रसंस्करण उद्यम के सफल संचालन के लिए प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी और मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव को धन्यवाद देते हैं। आत्मनिर्भर भारत अभियान के तहत संचालित इस योजना के अंतर्गत खाद्य प्रसंस्करण इकाई की स्थापना पर अधिकतम 10 लाख रुपए की सीमा तक 35 प्रतिशत अनुदान और 3 प्रतिशत ब्याज माफी का प्रावधान है। जिले के युवा, कृषक, और छोटे व्यवसायी व्यक्तिगत स्तर पर, तथा किसान उत्पाद संगठन, स्वसहायता समूह और उत्पादक सहकारी समिति उद्यानिकी एवं खाद्य प्रसंस्करण विभाग से संपर्क कर नए औद्योगिक इकाइयों की स्थापना अथवा मौजूदा इकाइयों के उन्नयन के लिए योजना अंतर्गत वित्तीय और तकनीकी सहायता प्राप्त कर सकते हैं।

पोरसा मुक्तिधाम में बेजुबान पक्षियों के लिए बन रहे घोंसले, समाजसेवी डॉ. अनिल गुप्ता की अनूठी पहल

पोरसा, जीएनएस। आमतौर पर हर व्यक्ति अपने और अपने परिवार तथा रिश्तेदारों की सुख-सुविधाओं और जरूरतों के बारे में सोचता है, लेकिन बेजुबान पक्षियों के लिए व्यवस्था करने की चिंता कम ही लोग करते हैं। इसी सोच को बदलने और पक्षियों के संरक्षण के लिए पोरसा के समाजसेवी एवं मुक्तिधाम के रचनाकार डॉ. अनिल गुप्ता द्वारा अनूठी पहल की जा रही है।

मुक्तिधाम परिसर में सर्दी के मौसम को देखते हुए पक्षियों के लिए विशेष रूप से घोंसले तैयार किए जा रहे हैं। डॉ. गुप्ता का उद्देश्य है कि ठंड, आंधी और बारिश के दौरान पक्षियों को सुरक्षित आश्रय मिल सके। इन घोंसलों का निर्माण प्राकृतिक मिट्टी के कलशों से किया जा रहा है, ताकि पक्षियों को उनके प्राकृतिक वातावरण के अनुरूप सुरक्षित स्थान उपलब्ध हो सके।

बताया गया है कि घोंसलों का निर्माण कार्य आगामी 8 से 10 दिनों में पूरा होने की उम्मीद है। पिछले वर्ष भी मुक्तिधाम परिसर में पक्षियों के लिए घोंसले बनाए गए थे, जो वर्तमान में सुरक्षित स्थिति में मौजूद हैं। इस वर्ष इनकी संख्या पहले की अपेक्षा दोगुनी से अधिक किए जाने की योजना है। मुक्तिधाम परिसर में पक्षियों के लिए दाना-पानी सहित अन्य व्यवस्थाएं भी की जाती हैं। इसी कारण बड़ी संख्या में पक्षियों ने परिसर को अपना बसेरा बना लिया है। पक्षियों के लिए सुरक्षित आवास उपलब्ध कराने की यह पहल उनके संरक्षण की दिशा में एक महत्वपूर्ण सामाजिक प्रयास के रूप में सामने आ रही है। डॉ. गुप्ता बताते है कि आंधी और बारिश के कारण कई बार पक्षियों के घोंसले क्षतिग्रस्त हो जाते हैं और उनके अंडे टूट जाते हैं। ऐसे दृश्य देखकर उनके मन में पक्षियों के लिए स्थायी और सुरक्षित आश्रय बनाने का विचार आया। इसी सोच के तहत मिट्टी के कलशों को घोंसले के रूप में तैयार कर उन्हें मुक्तिधाम परिसर में लगाया जा रहा है। डॉ. गुप्ता का कहना है कि ÷अपने लिए तो सभी जीते हैं, लेकिन बेजुबान जीवों के लिए कुछ करना ही सच्ची मानवता है।÷ उनका प्रयास है कि मुक्तिधाम परिसर में पक्षियों को पूरे वर्ष दाना, पानी और सुरक्षित आवास मिलता रहे। पक्षियों के लिए की जा रही इस पहल को लेकर स्थानीय लोगों से भी सहयोग और मार्गदर्शन की अपील की गई है, ताकि इस अभियान को और व्यापक बनाया जा सके,। अपने और अपने परिवार के सदस्यों के लिए तथा अपने रिश्तेदारों के लिए हर आदमी सोचता है,,, मगर बेजुबान पक्षियों के लिए कौन सोचे ?, यह एक करिश्मा है कि मुक्ति धाम के रचनाकार समाज सेवी डॉक्टर अनिल गुप्ता ने पक्षियों के लिए पहले भी घर बनाए थे अब सर्दी आने वाली है इसलिए मुक्तिधाम में पक्षी अपर संख्या में विराजमान रहते है।

कहानी बदलाव की : पीएमएफएमई योजना से संवरा रानी देवी का भविष्य आटा चक्की व्यवसाय से हर माह 30 हजार रुपये तक आय

शिवपुरी, जीएनएस। शिवपुरी शहर के वैशाली गार्डन के पीछे, फतेहपुर गणेश कॉलोनी निवासी श्रीमती रानी देवी एक साधारण परिवार से आती हैं। योजना का लाभ मिलने से पूर्व उनके पास आय का कोई स्थायी या निश्चित साधन नहीं था। स्वयं का कोई स्वरोजगार शुरू करने के लिए वे लगातार प्रयासरत थीं, किंतु सीमित संसाधनों और पूंजी के अभाव में अपने सपनों को साकार करना एक बड़ी चुनौती बना हुआ था। श्रीमती रानी देवी के जीवन में नया मोड़ तब आया, जब उन्हें उद्यानिकी विभाग के डीआरपी श्री गिर्राज ओझा के माध्यम से शासन की महत्वाकांक्षी प्रधानमंत्री सूक्ष्म खाद्य प्रसंस्करण उद्यम उन्नयन योजना (पीएमएफएमई) की जानकारी मिली। योजना से प्रेरित होकर उन्होंने परी आटा चक्की के संचालन एवं विस्तार हेतु आवेदन किया। उद्यानिकी विभाग एवं बैंक के प्रशासनिक सहयोग से उन्हें 6 लाख रुपये का बैंक ऋण स्वीकृत हुआ, जिस पर शासन द्वारा 3 लाख 40 हजार रुपये की भारी-भरकम सब्सिडी (अनुदान) का संबल भी प्रदान किया गया।

जताया आभार

श्रीमती रानी देवी ने पीएमएफएमई योजना को छोटे एवं सूक्ष्म उद्यमियों के लिए अत्यंत कल्याणकारी और वरदान स्वरूप बताया है। उन्होंने कहा कि केंद्र सरकार एवं जिला प्रशासन के सहयोग से आज वे आत्मनिर्भर बनी हैं और अपने परिवार को बेहतर जीवन दे पा रही हैं। इस अभूतपूर्व सहयोग के लिए उन्होंने केन्द्र सरकार के प्रति सहृदय धन्यवाद एवं आभार व्यक्त किया है।

व्यवसाय का विस्तार और आय में वृद्धि

प्राप्त वित्तीय सहायता और सब्सिडी के माध्यम से श्रीमती रानी देवी ने अपनी परी आटा चक्की को आधुनिक उपकरणों और संसाधनों से सुसज्जित कर नए सिरे से स्थापित किया। गुणवत्तापूर्ण प्रसंस्करण और बेहतर प्रबंधन के कारण उनके व्यवसाय ने तेजी से रफ्तार पकड़ी। जिस परिवार के पास पहले नियमित आय का कोई जरिया नहीं था, आज उसी व्यवसाय से श्रीमती रानी देवी को प्रतिमाह 25 हजार से 30 हजार रुपये की शानदार शुद्ध आय प्राप्त हो रही है, जिससे उनके परिवार का आर्थिक स्तर काफी मजबूत हुआ है। श्रीमती रानी देवी न केवल स्वयं एक सफल और स्वावलंबी महिला उद्यमी बनकर उभरी हैं, बल्कि उन्होंने सामाजिक जिम्मेदारी का निर्वहन करते हुए अपने प्रतिष्ठान में 2 अन्य स्थानीय युवाओं को भी स्थायी रोजगार प्रदान किया है। एक गृहिणी से सफल व्यवसायी बनने का उनका यह सफर शिवपुरी जिले की अन्य महिलाओं और युवाओं के लिए स्वरोजगार अपनाने की एक बेहतरीन प्रेरणा बन गया है।

सफलता की कहानीः हुनर को मिला कारोबार का रूप, आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ रहीं नंदपुरा की समूह दीदियां

मुरैना, जीएनएस। स्व-सहायता समूहों से जुड़ी ग्रामीण महिलाएं अब बचत और समूह की गतिविधियों से आगे बढ़कर अपने हुनर को रोजगार और उद्यम का रूप दे रही हैं। मेहनत, आत्मविश्वास और सही मार्गदर्शन के साथ वे आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनने की दिशा में निरंतर कदम बढ़ा रही हैं। मुख्यमंत्री जन-विश्वास अभियान के तहत शुक्रवार को पोरसा विकासखण्ड के ग्राम नंदपुरा में आयोजित उद्यम पंजीयन शिविर में महिला उद्यमिता की इसी बदलती तस्वीर की झलक देखने को मिली।

शिविर में कलेक्टर श्री लोकेश कुमार जांगिड़ स्वयं उद्यम पंजीयन काउंटर पर पहुंचे और समूह की दीदियों से आत्मीयता के साथ संवाद किया। उन्होंने महिलाओं से उनके द्वारा किए जा रहे कार्यों, उद्यम पंजीयन की प्रक्रिया तथा उन्हें मिल रही सुविधाओं के संबंध में जानकारी ली। कलेक्टर ने यह भी जाना कि पंजीयन के दौरान महिलाओं को किसी प्रकार की कठिनाई तो नहीं आ रही है। कलेक्टर के इस सहज संवाद पर समूह की दीदी ने बताया कि उद्यम पंजीयन की प्रक्रिया सरल रही और शिविर में आज 15 उद्यम पंजीयन किए गए हैं। महिलाओं ने बताया कि उद्यम को पंजीकृत कराने से उन्हें अपने काम को आगे बढ़ाने और उसे एक व्यवस्थित पहचान देने का अवसर मिल रहा है।

नंदपुरा में हुए 15 उद्यम पंजीयन केवल एक संख्या नहीं हैं, बल्कि अपने हुनर पर भरोसा कर आगे बढ़ रही उन महिलाओं के प्रयासों की पहचान हैं, जो अपने लिए रोजगार के अवसर तैयार करने के साथ अपने परिवार की आर्थिक स्थिति को मजबूत बनाने की दिशा में आगे बढ़ रही हैं। उद्यम पंजीयन के माध्यम से उनके छोटे प्रयासों को औपचारिक पहचान मिल रही है और आगे बढ़ने के लिए नई संभावनाओं के द्वार खुल रहे हैं। शिविर में मुख्य कार्यपालन अधिकारी, जिला पंचायत श्री कमलेश कुमार भार्गव की विशेष उपस्थिति रही। अधिकारियों ने समूह की महिलाओं को उद्यम पंजीयन के महत्व एवं उससे मिलने वाले लाभों की जानकारी दी। साथ ही महिलाओं को अपने व्यवसाय को विस्तार देने तथा उपलब्ध शासकीय योजनाओं एवं सुविधाओं का लाभ उठाने के लिए प्रोत्साहित किया। उद्यम पंजीयन के माध्यम से समूह की दीदियों को अपने व्यवसाय को औपचारिक पहचान देने के साथ विभिन्न शासकीय योजनाओं एवं सुविधाओं से जुड़ने का अवसर मिल रहा है। प्रशासन की पहल और महिलाओं की मेहनत के इस मेल से ग्रामीण क्षेत्रों में आर्थिक गतिविधियों को नई गति मिल रही है। नंदपुरा की समूह दीदियों का बढ़ता आत्मविश्वास इस बदलाव की तस्वीर प्रस्तुत करता है। जब महिलाओं को अवसर, मार्गदर्शन और आवश्यक सुविधाएं मिलती हैं, तो उनके हुनर को केवल घरेलू काम तक सीमित रहने के बजाय रोजगार और उद्यम का स्वरूप मिलता है। यही छोटे-छोटे कदम आगे चलकर परिवारों की आर्थिक मजबूती और ग्रामीण महिलाओं की आत्मनिर्भरता का आधार बनते हैं।

सफलता की कहानी: सिन्धबाज के परिवार के लिए बारिश अब डर नहीं, केवल मौसम है

ग्वालियर, जीएनएस।
एक पक्की छत सिर्फ ईंट-पत्थर से नहीं बनती, वह भविष्य की नींव भी रखती है। सिंधुबाज से बेहतर भला इसे कौन समझ सकता है। कभी बरसात की हर रात सिंधबाज के परिवार के लिए डर लेकर आती थी, वजह थी जिस कच्ची झोपड़ी में उनका परिवार रहता था वह टपकती थी। पर अब हालात बदल गए हैं। सिंधबाज के परिवार के लिए बारिश अब डर नहीं, केवल खुशनुमा मौसम है। ÷सेवाङ्कसंकल्प अभियान÷ की भावना के अनुरूप सरकार द्वारा प्रधानमंत्री जन मन आवास योजना के तहत बनवाये गए पक्के घर में सिंधबाज परिवार सहित रहते हैं। साथ ही यहीं से अपनी साउण्ड सिस्टम की दुकान भी चलाते हैं।

ग्वालियर जिले की मुरार जनपद पंचायत की ग्राम पंचायत हस्तिनापुर के निवासी सिंधबाज अनुसूचित जनजाति से ताल्लुक रखते हैं। उनका पक्के घर का सपना लंबे समय तक सपना ही बना रहा। मजदूरी ही परिवार की आजीविका का एकमात्र सहारा थी। जितना कमाते वह परिवार के भरण पोषण में खर्च हो जाता।

इसी बीच प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने प्रधानमंत्री जनमन आवास योजना (प्रधानमंत्री जनजाति आदिवासी न्याय महाअभियान) शुरू की। यहीं से सिंधबाज के दिन फिर गए। इसी योजना के तहत सिंधबाज का आवास स्वीकृत हो गया। सरकार से मिली 2 लाख रुपये की सहायता राशि से उनका शौचालय सहित पक्का मकान बन गया है। अब बारिश उनके परिवार के लिए डर नहीं, केवल मौसम है।

अपने जीवन में आए बदलाव के लिए सिंधबाज प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी और मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के प्रति आभार जताते हैं। उनका कहना है कि सुरक्षित घर मिलने के बाद अब वे पूरे भरोसे के साथ अपने रोजगार को बढ़ाने और बच्चों का भविष्य संवारने में जुटे हैं।

बचत ने खोले तरक्की के रास्ते: पक्का घर बनने के बाद मरम्मत का खर्च खत्म हुआ और वही पैसा परिवार की जरूरतों पर लगने लगा। सिंधबाज ने अपने संसाधनों से साउण्ड सिस्टम की दुकान शुरू की। अब उन्हें काम की तलाश में गांव से बाहर भटकना नहीं पड़ता और वे परिवार को ज्यादा समय भी दे पाते हैं। उनकी पत्नी रतनगढ़ माता आजीविका समूह से जुड़कर काम कर रही हैं। दोनों की कमाई से घर की आमदनी बढ़ी है और बच्चों की बेहतर शिक्षा का रास्ता खुला है।

सरकार से एक नहीं कई सहारे मिले: आवास के साथ सिंधबाज के परिवार को उज्ज्वला गैस कनेक्शन, बिजली, नल कनेक्शन, आयुष्मान कार्ड, सुकन्या योजना, आहार अनुदान, अंत्योदय राशन कार्ड और भवन एवं संनिर्माण कर्मकार मंडल कार्ड का लाभ भी मिला है। इन योजनाओं ने परिवार की आर्थिक-सामाजिक स्थिति बदली और गांव में उनका मान-सम्मान भी बढ़ा। सिंधबाज के लिए यह घर केवल ईंट-पत्थर की दीवारें नहीं, बल्कि सुरक्षा, आत्मसम्मान और आत्मनिर्भर भविष्य की मजबूत नींव है। वर्तमान में चल रहे ÷सेवाङ्कसंकल्प अभियान÷ के माध्यम से ऐसे ही जरूरतमंद परिवारों तक योजनाओं का लाभ पहुंचाने और उनके जीवन में आए बदलावों को सामने लाने का प्रयास सरकार द्वारा किया जा रहा है।

यह बहुत अच्छा एहसास, हमारी गेंदबाजी यूनिट खास तारीफ की हकदार: हरमनप्रीत कौर

भारतीय महिला क्रिकेट टीम ने फाइनल मुकाबले में श्रीलंका को 147 रनों से रौंदने के साथ ही एशियन गेम्स 2026 में गोल्ड मेडल अपने नाम किया। भारतीय टीम से मिले 217 रनों के विशाल लक्ष्य का पीछा करते हुए श्रीलंका की पूरी टीम 69 रन बनाकर ऑलआउट हुई। टीम के पूरे टूर्नामेंट में शानदार प्रदर्शन की कप्तान हरमनप्रीत कौर ने जमकर तारीफ की। उन्होंने खासतौर पर गेंदबाजों की सराहना की। गोल्ड मेडल जीतने के बाद उन्होंने कहा, ÷यह बहुत अच्छा एहसास है। टूर्नामेंट से पहले, हमने बिना हारे आगे बढ़ने के बारे में बहुत बात की थी, लेकिन उससे भी जरूरी बात यह थी कि हम अपने तय किए गए ऊंचे स्टैंडर्ड के हिसाब से खेलें। यह देखकर बहुत अच्छा लगता है कि हर कोई हर मैच में कितनी सकारात्मक सोच के साथ उतरता है। जिस भी खिलाड़ी को मौका मिला, उसने अच्छा प्रदर्शन किया। एक कप्तान और एक टीम के तौर पर, हम यही चाहते थे - बिना हारे आगे बढ़ना और लगातार अच्छा प्रदर्शन करना।

उन्होंने टीम के गेंदबाजों के प्रदर्शन की विशेष तौर पर तारीफ करते हुए कहा, ÷हमें खुद से यही उम्मीद थी और यह देखकर बहुत अच्छा लगा कि सभी ने पूरे भरोसे के साथ उस सोच को हकीकत में बदला। हमारी गेंदबाजी यूनिट

खास तारीफ की हकदार है, क्योंकि हमने इस पर बहुत मेहनत की है। क्रांति गौड़ और नंदिनी जैसी युवा गेंदबाजों ने बड़ी जिम्मेदारियां उठाईं और जिस तरह से उन्होंने प्रदर्शन किया, खासकर पावरप्ले में उनकी गेंदबाजी शानदार थी।÷

उन्होंने आगे कहा, ÷हमारे गेंदबाजी कोच और स्टाफ ने उनके साथ इसी पर बहुत बारीकी से काम किया था। युवा खिलाड़ियों के अलावा, हमारा स्पिन अटैक हमारी मुख्य ताकत है; श्रेयंका पाटिल और दीप्ति शर्मा जैसी गेंदबाज लगातार मैच जिताने वाली खिलाड़ी रही हैं और हमेशा सबसे अधिक विकेट लेने वालों में शामिल रहती हैं। कुल मिलाकर, अनुभव और नए टैलेंट के बीच का तालमेल एकदम सही था और जरूरत पड़ने पर हर खिलाड़ी ने अच्छा प्रदर्शन किया।÷ भारत की ओर से बल्लेबाजी में स्मृति मंधाना ने 79 रनों की दमदार पारी खेली। वहीं, ऋचा घोष ने नाबाद 49 और शेफाली वर्मा ने 48 रनों का योगदान दिया।

इंग्लैंड के तेज गेंदबाज मार्क वुड ने इंटरनेशनल क्रिकेट से किया संन्यास का ऐलान

इंग्लैंड के तेज गेंदबाज मार्क वुड ने इंटरनेशनल क्रिकेट से संन्यास का ऐलान कर दिया है। वुड इंग्लैंड की दो बार विश्व कप जीतने वाली टीम का हिस्सा रहे हैं। वुड ने साल 2015 में लॉर्ड्स के मैदान पर न्यूजीलैंड के खिलाफ अपना डेब्यू किया था। उन्होंने अपने इंटरनेशनल करियर में कुल 38 टेस्ट मैच खेले और इस दौरान 19 विकेट चटकाए। वहीं, 70 वनडे मुकाबलों में वुड ने 80 विकेट निकाले जबकि 38 टी20 इंटरनेशनल मैचों में उन्होंने कुल 54 विकेट चटकाए। वुड साल 2019 में इंग्लैंड की वनडे विश्व कप जीतने वाली टीम का हिस्सा रहे। इसके साथ ही जोस बटलर की कप्तानी में साल 2022 में टी20 विश्व कप जीतने वाली

इंग्लिश टीम में भी वुड शामिल रहे। 36 साल के वुड ने चार एशेज सीरीज में हिस्सा लिया और 2015 में अपनी पहली सीरीज के दौरान ट्रेंट ब्रिज में ट्रॉफी वापस पाने के लिए इंग्लैंड की ओर से निर्णायक विकेट लिया था। 2023 में ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ हेडिंग्ले में उनके शानदार स्पेल ने भी इंग्लैंड को 2-0 से पिछड़ने के बाद वापसी करने और सीरीज ड्रॉ कराने में अहम भूमिका निभाई।

इंग्लैंड को 2019 में वनडे विश्व कप जिताने में वुड ने अहम किरदार निभाया और उन्होंने टूर्नामेंट में कुल 18 विकेट निकाले। फाइनल में मांसपेशियों में खिंचाव होने के बावजूद वह पूरी रफ्तार के साथ गेंदबाजी करते रहे थे। मार्क वुड ने अपने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म %इंस्टाग्राम% पर लिखा, ÷मैंने इंटरनेशनल क्रिकेट से संन्यास लेने का फैसला किया है। हालांकि, पिछले साल को देखते हुए यह कोई हैरानी की बात नहीं हो सकती लेकिन मेरे कॉन्ट्रैक्ट के अंत में यह एक स्वाभाविक समय लगता है। मैंने हमेशा मजबूत बने रहने और चोट से वापसी करके लोगों को गलत साबित करने और सबको यह दिखाने की कोशिश की है कि मैं क्या कर सकता हूं। मेडिकल सलाह के अनुसार, टेस्ट क्रिकेट और 50 ओवर का क्रिकेट खेलना संभव नहीं है, इसलिए पिछले एक साल में इंग्लैंड के लिए खेलने का सपना धीरे-धीरे मुझसे दूर होता गया।÷

उन्होंने लिखा, ÷इंग्लैंड के लिए खेलना मेरे लिए सबसे बड़ा सम्मान और एक सपना सच होने जैसा रहा है। मेरे अंदर का छोटा बच्चा इंग्लैंड के लिए इतना ज्यादा खेलने पर बहुत खुश होगा। दुनियाभर में घूमना, शानदार लोगों से मिलना और बेहतरीन खिलाड़ियों के साथ और उनके खिलाफ क्रिकेट खेलना- ये सब करना मेरे लिए बहुत सौभाग्य की बात है और मैंने हमेशा इसे पसंद किया है।

एशियन गेम्स 2026: फाइनल में भारतीय महिला टीम ने रचा इतिहास, टी20 इंटरनेशनल में हासिल की अपनी सबसे बड़ी जीत

भारतीय महिला क्रिकेट टीम ने एशियन गेम्स 2026 में लगातार दूसरी बार गोल्ड मेडल अपने नाम किया। फाइनल मुकाबले में भारतीय टीम ने बेहतरीन प्रदर्शन करते हुए श्रीलंका को 147 रनों से रौंदा। भारतीय टीम ने इस जीत के साथ ही इतिहास रच दिया है। यह रनों के लिहाज से टीम इंडिया की टी20 इंटरनेशनल क्रिकेट में अब तक की सबसे बड़ी जीत है।

भारतीय टीम से मिले 217 रनों के विशाल लक्ष्य का पीछा करते हुए श्रीलंका की पूरी टीम सिर्फ 69 रन बनाकर ऑलआउट हुई। इससे पहले, भारत ने मलेशिया को एशिया कप 2018 में 142 रनों से हराया था। भारतीय टीम की गेंदबाजों का प्रदर्शन फाइनल मुकाबले में शानदार रहा। दीप्ति शर्मा ने 4 ओवर के स्पेल में महज 6 रन खर्च करते हुए 3 विकेट चटकाए।

वहीं, शेफाली वर्मा, श्रेयंका पाटिल और श्री चरणी ने दो-दो विकेट झटके। श्रीलंका की आठ बल्लेबाज दहाई का आंकड़ा भी नहीं छू सकीं। टीम की ओर से सर्वाधिक 14 रन कौशानी नुथ्यांगना ने बनाए।

इससे पहले, टीम इंडिया की बल्लेबाजों का प्रदर्शन दमदार रहा। शेफाली वर्मा और स्मृति मंधाना ने पहले विकेट के लिए मिलकर 10 ओवर में 99 रन जोड़े। शेफाली ने शानदार बल्लेबाजी करते हुए 29 गेंदों में 48 रन बनाए। वहीं, मंधाना ने 45 गेंदों का सामना करते हुए 79 रन बनाए।

गोल्ड मेडल पहनकर पोडियम पर खड़े होना खुशी का पल था: श्रेयंका पाटिल

एशियन गेम्स 2026 में मंगलवार को भारतीय महिला क्रिकेट टीम ने श्रीलंका के खिलाफ फाइनल मैच 147 रन से जीतकर गोल्ड मेडल अपने नाम किया। श्रेयंका पाटिल गोल्ड मेडल पहनकर और पोडियम पर खड़े होकर बहुत खुश महसूस कर रही हैं। मंगलवार को निशिन स्थित कोरोगी स्पोर्ट्स पार्क में भारत ने 20 ओवरों में 3 विकेट खोकर 216 रन बनाए। %विमेन इन ब्लू% की तरफ से शेफाली वर्मा (48), स्मृति मंधाना (79) और ऋचा घोष (नाबाद 49) ने शानदार पारियां खेलीं। इसके जवाब में श्रीलंका 15.4 ओवरों में सिर्फ 69 रन पर सिमट गई। भारत के लिए दीप्ति शर्मा ने सर्वाधिक 3 विकेट हासिल किए। श्रेयंका पाटिल के लिए, गोल्ड मेडल जीतना उस सपने के सच होने जैसा था जो उन्होंने फाइनल से पहले देखा। इस ऑलराउंडर ने बताया कि उन्होंने पहले ही खुद के गले में गोल्ड मेडल पहने पोडियम पर खड़े होने की कल्पना कर ली थी।

उन्होंने %आईएएनएस% को बताया, ÷मैं इस मैच से पहले बहुत उत्साहित थी। मैं पहले से ही सोच रही थी कि गोल्ड मेडल पहनूंगी, क्योंकि मुझे सोच को हकीकत में बदलना और कल्पना करना पसंद है। इस गोल्ड मेडल को पहनकर और पोडियम पर खड़े होकर बहुत खुश और आभारी महसूस कर रही हूं। मेरे लिए यह दिन बहुत खास है। इसलिए, मुझे लगता है कि मैं अपने माता-पिता को फोन करूंगी, उन्हें मेडल दिखाऊंगी और शानदार रात्रिभोज भी करूंगी। मुझे अलग-अलग तरह का खाना आजमाना पसंद है। अब जब मैं जापान में हूं, तो मुझे जापानी खाना भी पसंद है। मुझे सूशी बहुत पसंद है।÷

विकेटकीपर-बल्लेबाज ऋचा घोष ने इस स्वर्णिम जीत को एक खास एहसास बताया है। भारत की शानदार जीत के बाद ऋचा ने कहा, ÷बहुत अच्छा लग रहा है। मैं बहुत खुश हूं। जब आपके पास गोल्ड मेडल होता है, तो एक बिल्कुल अलग एहसास होता है। मुझे सच में बहुत अच्छा लग रहा है।÷

स्वर्णिम जीत पर दीप्ति शर्मा ने पत्रकारों से कहा, ÷गोल्ड मेडल जीतकर हमें दोहरी खुशी मिली है। पिछली बार भी हमने गोल्ड मेडल हासिल किया था। हमने कुछ ही दिनों के अंतराल में श्रीलंका को दो बार फाइनल में हराया है। वह बहुत अच्छी टीम है, लेकिन हमें खुद भी विश्वास था। इस जीत से हम काफी प्रोत्साहित होंगे, क्योंकि आगामी ओलंपिक गेम्स में क्रिकेट भी शामिल होगा। मैं इस मेडल को अपनी मां को समर्पित करती हूं। इस जीत के साथ भारत ने एशियाई खेलों में महिला क्रिकेट का गोल्ड मेडल अपने नाम बरकरार रखा; इससे पहले पिछले एशियन के फाइनल में भी भारत ने श्रीलंका को हराया था।

सफलता की कहानीः खेतों की मिट्टी से उद्यमिता की उड़ान रविकांत यादव ने लिखी आत्मनिर्भरता की नई इबारत

ग्वालियर, जीएनएस।
कभी सीमित संसाधनों और आर्थिक तंगी के कारण जिस किशोरवय युवक को दसवीं के बाद पढ़ाई छोड़नी पड़ी थी, आज वही युवा 15 से अधिक परिवारों की रोजी-रोटी का सहारा बन चुका है। इस युवा की दृढ़ इच्छाशक्ति व सरकारी संबल ने आत्मनिर्भरता की प्रेरणादायक इबारत गढ़ दी है।

यह सच्ची कहानी है ग्वालियर जिले की जनपद पंचायत मुरार के ग्राम सौंसा निवासी रविकांत यादव की । उन्होंने यह साबित करके दिखाया है कि सरकारी योजनाओं का सही उपयोग करें तो परिस्थितियाँ बदलते देर नहीं लगती। खेती से जुड़े साधारण परिवार में जन्मे रविकांत के सामने जब आर्थिक चुनौतियाँ आईं, तो उन्होंने हार मानने के बजाय अपने लिए खुद का रोजगार खड़ा करने की ठानी। इसी संकल्प ने उन्हें प्रधानमंत्री रोजगार सृजन कार्यक्रम (पीएमईजीपी) तक पहुँचाया। एक ऐसी योजना, जो युवाओं को अपने सपनों को उद्यम में बदलने का अवसर देती है।

जिला व्यापार एवं उद्योग केंद्र, ग्वालियर के अधिकारियों के मार्गदर्शन में रविकांत ने सरसों तेल मिल स्थापित करने की योजना बनाई। पीएमईजीपी के तहत उन्हें 25 लाख रुपये का ऋण स्वीकृत हुआ, जिसमें करीब पौने 9 लाख रुपये का अनुदान शामिल था। इस सहायता से उन्होंने अपने गाँव सौंसा में ही तेल मिल की नींव रखी और मेहनत व लगन से इसे आगे बढ़ाया। आज नतीजा सबके सामने है। रविकांत की इकाई में 15 से अधिक लोगों को प्रत्यक्ष और कई अन्य को अप्रत्यक्ष रोजगार मिल रहा है। उनकी मिल का मासिक कारोबार 30 लाख रुपये से अधिक तक पहुँच चुका है। यह सफलता केवल आँकड़ों की नहीं, बल्कि एक युवा के आत्मविश्वास और सतत परिश्रम की कहानी है। ÷सेवा-संकल्प अभियान÷ एवं ÷मुख्यमंत्री जन-विश्वास अभियान÷ के तहत ग्राम सुपावली में आयोजित हुए जिला स्तरीय जन-विश्वास शिविर में रविकांत ने जब अपनी आत्मनिर्भरता का सफर साझा किया तो कार्यक्रम में मौजूद अन्य युवाओं पर इसका गहरा असर पड़ा। युवा बोले कि अब हम भी नौकरी के पीछे पड़ने के बजाय सरकार की योजनाओं का लाभ उठाकर उद्यमी बनेंगे। रविकांत यादव कहते हैं, ÷प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी द्वारा शुरू की गई पीएमईजीपी योजना ने हम जैसे युवाओं के लिए उद्यम शुरू करने का रास्ता आसान बना दिया है। मुझे खुशी है कि मेरे उद्योग से दूसरों को भी रोजगार मिल रहा है।÷ वे प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी और मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के प्रति आभार व्यक्त करते हुए कहते हैं कि दोनों सरकारों की योजनाएँ सही मायने में ÷विकसित भारत÷ की संकल्पना को साकार कर रही हैं। सेवा संकल्प अभियान के माध्यम से इन्हीं योजनाओं को जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास हो रहा है। निश्चित ही इससे रविकांत जैसे कई नए उद्यमी उभरकर सामने आयेंगे।

कहानी बदलाव की: शिवांग गर्ग ने साकार किया स्व-रोजगार का सपना, स्थापित की अपनी ''प्रिंटिंग प्रेस''

शिवपुरी, जीएनएस।
जिले के कोलारस अप्रोच रोड मानीपुरा निवासी युवा शिवांग गर्ग अपनी शिक्षा पूरी करने के बाद स्व-रोजगार स्थापित करना चाहते थे। ग्रेजुएशन की पढ़ाई के उपरांत घर पर रहकर माता-पिता एवं अभिभावकों की देखभाल करने की जिम्मेदारी भी उन्हीं के कंधों पर थी। स्थानीय स्तर पर ही कोई स्थाई व्यवसाय शुरू करने की सोच के साथ वे निरंतर अवसरों की तलाश कर रहे थे, ताकि परिवार के समीप रहकर ही आत्मनिर्भर बना जा सके।

इसी दौरान शिवांग को केंद्र शासन की ''प्रधानमंत्री रोजगार सृजन कार्यक्रम'' योजना की जानकारी प्राप्त हुई। योजना के संबंध में विस्तृत मार्गदर्शन प्राप्त करने के उद्देश्य से उन्होंने जिला व्यापार एवं उद्योग केंद्र शिवपुरी में

पदस्थ अधिकारियों से संपर्क किया। अधिकारियों द्वारा योजना की पात्रता एवं सब्सिडी की पूर्ण जानकारी मिलने के बाद शिवांग ने ऑनलाइन आवेदन प्रस्तुत किया। प्रकरण स्वीकृत होने के उपरांत केनरा बैंक शाखा कोलारस द्वारा सभी आवश्यक औपचारिकताएं पूर्ण कराकर उन्हें 10 लाख रुपये का ऋण स्वीकृत एवं वितरित किया गया।

व्यवसाय का विस्तार व आधुनिक प्रिंटिंग प्रेस की स्थापना
बैंक से प्राप्त वित्तीय सहायता के बल पर शिवांग गर्ग ने अपनी खुद की व्यावसायिक इकाई गर्ग प्रिंटिंग प्रेस की शुरुआत की। उन्होंने आधुनिक फ्लेक्स एवं प्रिंटिंग मशीनों को स्थापित किया, जिससे गुणवत्तापूर्ण छपाई का कार्य शुरू हुआ। उत्कृष्ट कार्य एवं बेहतर सेवाओं के दम पर बाजार में उनकी प्रिंटिंग प्रेस की मांग तेजी से बढ़ी, जिससे उनकी आय में उल्लेखनीय वृद्धि हुई और व्यवसाय सुचारू रूप से स्थापित हो गया।

सामाजिक प्रभाव एवं रोजगार सृजनः शिवांग गर्ग न केवल स्वयं एक सफल और आत्मनिर्भर उद्यमी बने हैं, बल्कि उन्होंने अपनी इकाई में 3 अन्य स्थानीय युवाओं को प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से रोजगार भी प्रदान किया है। आज वे क्षेत्र के अन्य शिक्षित एवं बेरोजगार युवाओं के लिए एक मिसाल और प्रेरणा स्रोत बन चुके हैं, जो नौकरी की तलाश करने के बजाय स्वयं का व्यवसाय शुरू करने की सोच रखते हैं।

जिला व्यापार एवं उद्योग केंद्र द्वारा युवाओं को मिल रहे सतत मार्गदर्शन और प्रोत्साहन से जिले में स्व-रोजगार को नई गति मिल रही है। सफल उद्यमी शिवांग गर्ग ने अपनी इस उपलब्धि और सफलता के लिए देश के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी, जिला प्रशासन का हृदय से आभार व धन्यवाद व्यक्त किया है।

12 को निकलेगी राष्ट्रवीर दुर्गादास राठौर की शोभायात्रा

फिरोजाबाद, जीएनएस।
जिला राठौर सभा की ओर से मंगलवार को जलेसर रोड स्थित महकती रसोई में बैठक और प्रेस वार्ता का आयोजन किया गया। इसमें संगठन के नवनियुक्त पदाधिकारियों को पद एवं गोपनीयता की शपथ दिलाई गई। साथ ही 12 अक्तूबर को निकलने वाली राष्ट्रवीर दुर्गादास राठौर की शोभायात्रा की तैयारियों पर चर्चा की गई। कार्यक्रम में नौ अगस्त को हुए संगठनात्मक चुनाव में निर्वाचित जिलाध्यक्ष रश्मि कान्त राठौर और कोषाध्यक्ष एवं कार्यवाहक महामंत्री सुनील राठौर (बदनपुर वाले) को शपथ दिलाई गई। इसके अलावा महिला एवं युवा प्रकोष्ठ के नवनियुक्त पदाधिकारियों को मनोनयन पत्र देकर शपथ ग्रहण कराई गई। महिला प्रकोष्ठ में किरण राठौर को जिलाध्यक्ष और गीता राठौर (रामनगर) को महानगर अध्यक्ष बनाया गया। वहीं, युवा प्रकोष्ठ में एडवोकेट राजेंद्र सिंह राठौर को जिलाध्यक्ष और गौरव राठौर को महानगर अध्यक्ष की जिम्मेदारी सौंपी गई। बैठक में 12 अक्तूबर को निकलने वाली राष्ट्रवीर दुर्गादास राठौर की शोभायात्रा की रूपरेखा, मार्ग व्यवस्था और झांकियों को लेकर विचार-विमर्श किया गया। पदाधिकारियों ने समाज के लोगों से शोभायात्रा में अधिक से अधिक संख्या में शामिल होने की अपील की।

वार्ता के दौरान संतोष राठौर बाबा ने कहा वर्तमान विधायक से पीड़ित है महापौर जो हर एक काम में अड़ंगा लगाते हैं उन्होंने कहा आगामी विधानसभा चुनाव में किसी पार्टी ने प्रत्याशी नहीं बनाया तो राठौर महासभा अपना प्रत्याशी उतारेगी दौरान राजन लाल राठौर (फौजी), राम सेवक राठौर (फौजी), संतोष राठौर (बाबा), सिंटू राठौर, रजत राठौर आदि।

सर्वपितृ: गंगा स्नान का महत्व और धार्मिक मान्यताएं

हिंदू धर्म में अमावस्या तिथि का विशेष महत्व बताया गया है. अमावस्या तिथि को पितरों के तर्पण के लिए शुभ और उत्तम माना जाता है. आश्विन मास की अमावस्या को सर्वपितृ अमावस्या कहा जाता है. इस दिन पितरों का पिंडदान, श्राद्ध कर्म और तर्पण किया जाता है. इसे पितरों की विदाई का दिन माना जाता है. मान्यता है कि इस दिन पितरों को तृप्त करके ही वापस भेजना चाहिए. ऐसा करने से घर-परिवार पर पितरों का आशीर्वाद बना रहता है.

साल 2025 में सर्वपितृ अमावस्या 21 सितंबर, रविवार के दिन पड़ रही है. यह दिन पूर्ण रूप से पितरों को समर्पित होता है. शास्त्रों में इस तिथि पर स्नान, तर्पण और दान-पुण्य का विशेष महत्व बताया गया है.

सर्वपितृ अमावस्या पर स्नान का धार्मिक महत्व

पापों का नाश
सर्वपितृ अमावस्या पर पवित्र नदी जैसे गंगा, यमुना या किसी तीर्थ स्थल की नदी में स्नान करना अत्यंत शुभ माना गया है. यदि संभव न हो तो स्नान के जल में गंगाजल मिलाकर स्नान करना भी उत्तम है. मान्यता है कि ऐसा करने से जन्म-जन्मांतर के पाप धुल जाते हैं और आत्मा शुद्ध होती है.

पितरों की आत्मा को शांति
इस दिन स्नान करके तर्पण और पिंडदान करने से पितरों की आत्मा को शांति मिलती है. पितृ प्रसन्न होकर अपने वंशजों को सुख, समृद्धि और दीर्घायु का आशीर्वाद देते हैं.

मोक्ष की प्राप्ति
सर्वपितृ अमावस्या पर गंगा स्नान करने से न केवल पितरों की आत्मा उच्च लोक में गमन करती है बल्कि साधक को भी मोक्ष की प्राप्ति का मार्ग प्रशस्त होता है.

गंगा स्नान का महत्व
गंगा भारत की सबसे पवित्र नदियों में मानी जाती है. गंगा स्नान को पाप नाशिनी और मोक्षदायिनी कहा गया है. शास्त्रों में वर्णित है कि गंगा स्नान करने से जन्मों के पाप मिट जाते हैं और आत्मा पवित्र हो जाती है.

सर्वपितृ अमावस्या पर स्नान की विधि
प्रातः ब्रह्म मुहूर्त में उठकर स्नान करें.

स्नान से पहले संकल्प लें कि यह स्नान पितरों की तृप्ति और शांति के लिए है.

स्नान के समय पितरों का नाम लेकर तिल, अक्षत, पुष्प और जल अर्पित करें.

स्नान के बाद तर्पण और पिंडदान करें.

तुम्हारा दीदार...

और वो भी
आँखों में आँखें डालकर,
ये कशिश कलम से बयाँ करना
मेरे बस की बात नहीं...
तुम सामने होती हो,
तो दिल चाहता है
वक़्त वहीं ठहर जाए...
तुम्हारी आँखों में
मैं यूँ ही डूबा रहूँ,
और दुनिया से
मेरा कोई वास्ता ही न रहे।
मगर ये कैसी तड़प है...
कि तुम्हें सामने देखकर भी
दिल भरता नहीं,
और तुम दूर चली जाओ
तो तुम्हारी एक झलक के लिए
ये दिल तड़पता रहता है।
तुम्हारी आँखों में
जब मेरी आँखें ठहरती हैं,
तो लगता है जैसे
सालों से प्यासी कोई रूह
समंदर के किनारे आ खड़ी हुई हो..!

ममता सक्सेना

बेटी होने की सज़ा क्यों?

आज़ादी को गुज़रे दशकों का लंबा दौर हुआ,
बेटी के जन्म पर क्यों मन में कोई शोर हुआ?
बेटे की चाहत में बेटी यूं बोझ समझ ली जाए,
ममतामई %कोख से कली% क्यों? मिटाई जाए?
जिस घर बेटी जन्मे, वहाँ खुशियों के दीप जलें,
वह आँगन हँसी से महके, सपनों को पंख मिलें।
बेटा या बेटी, दोनों जीवन की अनमोल सौगात,
फिर क्यों लिंग के तराजू पे तौली जाती है बात?
एक बेटी सिर्फ बेटी नहीं, वह कल की माँ भी है,
किसी घर की रोशनी, दूसरे घरों की शान भी है।
दुर्भाग्य ये नहीं कि लोग आज भी बेटा चाहते हैं,
ये दुर्भाग्य है कुछ लोग बेटी को जीने नहीं देते हैं। आईए सोच बदलें उन बेटियों को अधिकार मिले,
जिस धरती पर जन्मी, उस धरती पे संसार मिले।
हर एक बेटी को स्नेह व सम्मान का आधार मिले,
नवयुग में बेटी को पाकर परिवार में चेहरे खिले।

संजय एम तराणेकर
(कवि, लेखक व समीक्षक)

नौकरी का वेतन और ड्यूटी का हिसाब

सरकारी कुर्सी मिली तो जिम्मेदारी साथ आई,
वेतन केवल हक नहीं, ड्यूटी की शपथ समाई।
छह महीने ड्यूटी से दूरी, फिर भी वेतन जारी,
सवाल उठा तो दफ्तर में हर कोई थोड़ा भारी।

पीजी की पढ़ाई, नौकरी की ड्यूटी अपनी बात,
दोनों साथ निभाने में नियमों का साफ हिसाब।
सिफारिश हो या रिश्ते, कानून सभी के लिए हो,
सरकारी पद पे बैठों तो कर्तव्य के प्रति नेक हो।
70 हजार तनख्वाह में जनता का हैं पैसा जुड़ा,
हर एक रुपये के पीछे विश्वास किसी का खड़ा।
जांच अगर अब हो रही है, सच सामने आने दो,
दोषी कौन–निर्दोष कौन नियमों को बतलाने दो।
(संदर्भ – विधायक की भतीजी को बिना काम सैलरी)

संजय एम तराणेकर
(कवि, लेखक व समीक्षक)

प्रेस स्वतंत्रता और सत्ता की सीमाओं पर अमेरिका में नई बहस

एडवोकेट किशन सनमुखदास

लोकतांत्रिक व्यवस्था में सत्ता और स्वतंत्र पत्रकारिता का संबंध केवल समाचारों के प्रकाशन तक सीमित नहीं होता। यह नागरिकों के सूचना के अधिकार, अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और शासन की जवाबदेही से भी जुड़ा होता है। इसी कारण अमेरिका में राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप और प्रमुख समाचार संस्थानों के बीच सितंबर 2026 में पैदा हुआ विवाद अंतरराष्ट्रीय स्तर पर चर्चा का विषय बन गया है।

18 सितंबर को ट्रंप ने सीएनएन, एमएस नाउ और पोलिटिको को व्हाइट हाउस से प्रतिबंधित करने की घोषणा की। उन्होंने इन संस्थानों पर ऐसी खबरें प्रकाशित करने का आरोप लगाया जिन्हें वे गलत या मनगढ़ंत मानते हैं। अगले दिन इन संस्थानों के पत्रकारों को व्हाइट हाउस में प्रवेश नहीं दिया गया और उनके प्रेस-पास निष्क्रिय कर दिए गए। संबंधित समाचार संस्थानों ने इसे प्रेस की स्वतंत्रता और अमेरिकी संविधान के प्रथम संशोधन से जुड़ा मामला बताते हुए चुनौती देने का निर्णय लिया।

टकराव के बीच ठप हुआ टेलीविजन प्रेस पूल : 21 सितंबर को राष्ट्रपति के कार्यक्रमों की दृश्य समाचार सामग्री उपलब्ध कराने वाली पारंपरिक टेलीविजन प्रेस पूल व्यवस्था भी प्रभावित हुई। एबीसी, सीबीएस, फॉक्स और एनबीसी से जुड़े समाचार संस्थानों ने राष्ट्रपति के कार्यक्रमों की साझा टेलीविजन कवरेज रोक दी। इस व्यवस्था का उद्देश्य सीमित स्थानों पर राष्ट्रपति के कार्यक्रमों की तस्वीरें और वीडियो तैयार कर उन्हें अन्य समाचार संस्थानों के साथ साझा करना रहा है।

यह घटनाक्रम इसलिए महत्वपूर्ण रहा क्योंकि इससे राष्ट्रपति के सार्वजनिक कार्यक्रमों की स्वतंत्र समाचार कवरेज की पारंपरिक व्यवस्था प्रभावित हुई। हालांकि इसे पांचों संस्थानों द्वारा समान प्रकार का बहिष्कार कहना पूरी तरह सटीक नहीं होगा; घटनाक्रम मुख्य रूप से व्हाइट हाउस की प्रेस-पहुंच नीति और उसके बाद पूल कवरेज रोकने के फैसले से जुड़ा था।

व्हाइट हाउस ने शुरू किया 'ट्रंप टीवी' : इसी बीच 21 सितंबर को व्हाइट हाउस ने 'ट्रंप टीवी' नाम से चौबीसों घंटे चलने वाला इंटरनेट आधारित प्रसारण मंच शुरू किया। व्हाइट हाउस के आधिकारिक अभिलेख में इसकी शुरुआत 21 सितंबर दर्ज है। इसमें राष्ट्रपति के भाषण, प्रशासनिक घोषणाएं, कार्यक्रम और अभिलेखीय सामग्री सीधे जनता तक पहुंचाने की व्यवस्था की गई।

इससे एक नया प्रश्न सामने आया कि क्या सरकार का अपना सीधा सूचना माध्यम होना स्वतंत्र पत्रकारिता का विकल्प बन सकता है। तथ्य यह है कि सरकार को अपनी नीतियां और घोषणाएं सीधे जनता तक पहुंचाने का अधिकार है, लेकिन स्वतंत्र समाचार माध्यमों की भूमिका केवल सरकारी सूचनाओं को प्रसारित करना नहीं है। वे सरकारी दावों की जांच, सवाल और वैकल्पिक दृष्टिकोण भी जनता तक पहुंचाते हैं।

विवाद पहुंच के अधिकार और संवैधानिक कसौटी तक पहुंचा : इस पूरे मामले का सबसे महत्वपूर्ण कानूनी प्रश्न यह बना कि क्या सरकार किसी समाचार संस्थान की व्हाइट हाउस तक पहुंच उसके समाचारों की विषयवस्तु से असहमति के आधार पर रोक सकती है। ट्रंप प्रशासन ने तर्क दिया कि व्हाइट हाउस तक पत्रकारों की पहुंच पूर्ण अधिकार नहीं, बल्कि प्रशासन द्वारा नियंत्रित सुविधा है। प्रशासन ने राष्ट्रीय सुरक्षा से जुड़े तर्क भी न्यायालय के सामने रखे। दूसरी ओर सीएनएन, एमएस नाउ और पोलिटिको ने कहा कि उनकी पहुंच समाचार कवरेज से असहमति के कारण छीनी गई और यह प्रथम संशोधन तथा उचित कानूनी प्रक्रिया के अधिकारों से जुड़ा मामला है।

तीनों समाचार संस्थानों ने 21 सितंबर को न्यायालय का रुख किया। उन्होंने तत्काल राहत की मांग करते हुए अपने पत्रकारों की व्हाइट हाउस पहुंच बहाल करने की मांग की।

24 सितंबर को न्यायालय ने दिया अंतरिम आदेश : इस विवाद में 24 सितंबर को महत्वपूर्ण न्यायिक घटनाक्रम सामने आया। अमेरिकी जिला न्यायाधीश टिमोथी केली ने ट्रंप प्रशासन के वरिष्ठ अधिकारियों को सीएनएन, एमएस नाउ और पोलिटिको के पत्रकारों को व्हाइट हाउस से प्रतिबंधित करने से अस्थायी रूप से रोक दिया और उनके प्रेस-पास तत्काल बहाल करने का आदेश दिया। यह अंतरिम आदेश 14 दिनों तक प्रभावी रहेगा, जब तक न्यायालय की ओर से कोई अन्य आदेश नहीं आता।

रिपोर्टों के अनुसार न्यायालय ने इस स्तर पर मुख्य रूप से प्रक्रिया और संवैधानिक प्रश्नों पर विचार किया। अदालत की आगे की कार्यवाही यह निर्धारित करेगी कि मामले के अंतिम कानूनी प्रश्नों पर क्या निष्कर्ष निकलता है। इसलिए वर्तमान अंतरिम आदेश को अंतिम संवैधानिक निर्णय के रूप में देखना उचित नहीं होगा।

लोकतंत्र के लिए व्यापक प्रश्न : इस विवाद का दायरा केवल ट्रंप और तीन समाचार संस्थानों तक सीमित नहीं है। इसके केंद्र में यह प्रश्न है कि लोकतांत्रिक शासन में सरकारी संस्थानों तक पत्रकारों की पहुंच किन नियमों के आधार पर निर्धारित की जानी चाहिए। दूसरा प्रश्न यह है कि सरकार को अपनी सूचना जनता तक सीधे पहुंचाने की कितनी स्वतंत्रता है और तीसरा यह कि आलोचनात्मक पत्रकारिता तथा प्रशासनिक नियंत्रण के बीच संवैधानिक सीमा कहां निर्धारित होती है। स्वतंत्र पत्रकारिता का अर्थ यह नहीं है कि समाचार संस्थान तथ्यात्मक जिम्मेदारी से मुक्त हैं। पत्रकारिता में सत्यापन, निष्पक्षता और सार्वजनिक उत्तरदायित्व महत्वपूर्ण हैं। उसी प्रकार सरकार के पास भी अपनी नीतियों और निर्णयों को जनता के सामने रखने का अधिकार है। लोकतांत्रिक व्यवस्था में दोनों भूमिकाओं के बीच संतुलन आवश्यक है।

अमेरिका का वर्तमान विवाद इसी व्यापक लोकतांत्रिक प्रश्न को सामने लाता है। सरकार का अपना सूचना माध्यम होना अपने आप में असंवैधानिक नहीं माना जा सकता और प्रेस को सरकारी परिसर में प्रवेश का असीमित अधिकार भी स्वतः प्राप्त नहीं होता। लेकिन यदि किसी समाचार संस्थान की पहुंच उसकी समाचार सामग्री या आलोचनात्मक रिपोर्टिंग के कारण सीमित किए जाने का आरोप सामने आता है, तो मामला अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और संवैधानिक समानता के प्रश्नों से जुड़ जाता है। अंततः इस विवाद की स्थायी कानूनी स्थिति आगे की न्यायिक प्रक्रिया से स्पष्ट होगी।

सहायक जेल अधीक्षक एवं जेल प्रहरी भर्ती का द्वितीय चरण 7 से 18 अक्टूबर तक

ग्वालियर, जीएनएस।

मध्यप्रदेश कर्मचारी चयन मंडल द्वारा सहायक जेल अधीक्षक एवं जेल प्रहरी भर्ती परीक्षा-2026 की लिखित परीक्षा 4 जून से 20 जून तक आयोजित की गई थी। लिखित परीक्षा का परिणाम गत 14 अगस्त को घोषित कर दिया गया है। लिखित परीक्षा में सफल अभ्यर्थियों के लिए भर्ती प्रक्रिया के द्वितीय चरण में शारीरिक नापजोख, प्रवीणता टेस्ट एवं दस्तावेज सत्यापन का कार्य किया जायेगा। यह प्रक्रिया आगामी 7 अक्टूबर से 18 अक्टूबर तक भोपाल स्थित अंतरराष्ट्रीय स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स, मध्यप्रदेश शूटिंग अकादमी के सामने, नाथू बरखेड़ा रोड, नीलबड़ में संपादित होगी।

द्वितीय चरण की परीक्षा से संबंधित विस्तृत जानकारी एवं आवश्यक प्रपत्र मध्यप्रदेश कर्मचारी चयन मंडल की वेबसाइट www.esb.mp.gov.in तथा जेल विभाग की वेबसाइट jail.mp.gov.in पर उपलब्ध हैं। लिखित परीक्षा में सफल अभ्यर्थी वेबसाइट से आवश्यक प्रपत्र डाउनलोड कर निर्धारित तिथि एवं समय पर सभी जरूरी दस्तावेजों एवं आवश्यक जानकारी के साथ शारीरिक नापजोख, प्रवीणता टेस्ट एवं दस्तावेज सत्यापन के लिए उपस्थित हो सकेंगे। सहायक जेल अधीक्षक के 25 पदों के लिए 256 अभ्यर्थी तथा जेल प्रहरी के 757 पदों के लिए 8,217 अभ्यर्थी प्रथम चरण की लिखित परीक्षा में पात्र पाए गए हैं। इन सभी सफल अभ्यर्थियों का भर्ती प्रक्रिया के द्वितीय चरण में शारीरिक नापजोख, प्रवीणता टेस्ट एवं दस्तावेज सत्यापन किया जाना है।

प्रधानमंत्री के 25 वर्षों के सार्वजनिक जीवन की यात्रा जन-जन तक पहुंचाएगी भाजपा

वाराणसी, जीएनएस।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के सार्वजनिक जीवन के 25 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में भारतीय जनता पार्टी द्वारा चलाए जा रहे 'सेवा संकल्प अभियान - 2026' के तहत वाराणसी जिले में विभिन्न कार्यक्रमों की तैयारियां तेज कर दी गई हैं 7 अभियान के अंतर्गत 'नमो सेवा - अनकही कहानियां' कार्यक्रम के माध्यम से 17 सितंबर से 15 अक्टूबर तक जिले की प्रत्येक विधानसभा में 28 प्रमुख स्थानों पर नुक्कड़ नाटकों का मंचन तथा एक नाट्य मंचन किया जाएगा 7 भाजपा जिलाध्यक्ष राम शकल पटेल के दिशा निर्देशन में आयोजित होने वाले इन कार्यक्रमों को लेकर सर्किट हाउस में पत्रकार वार्ता आयोजित की गई 7 पत्रकार वार्ता में वाराणसी जिलाध्यक्ष राम शकल पटेल ने बताया कि नुक्कड़ नाटकों के माध्यम से प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के सार्वजनिक जीवन,उनकी सेवा,समर्पण, अंत्योदय की भावना और राष्ट्र निर्माण के लिए किए गए कार्यों की 25 वर्षों की यात्रा को जन-जन तक पहुंचाने का प्रयास किया जा रहा है 7 उन्होंने बताया कि सेवा संकल्प अभियान 17 सितंबर से 15 अक्टूबर तक चलाया जा रहा है।

कहानी बदलाव कीः खेती से बदली किस्मतः कृषक मजबूत सिंह गुर्जर ने चिया सीड की खेती से रचा सफलता का नया इतिहास

शिवपुरी, जीएनएस।

जिले के ग्राम दौलतगंज निवासी कृषक श्री मजबूत सिंह गुर्जर परंपरागत खेती की चुनौतियों और बढ़ती लागत से अलग कुछ नया करने की सोच रहे थे। खेती में रासायनिक खादों के अत्यधिक उपयोग और कम मुनाफे के कारण वे कम लागत में अधिक लाभ देने वाली फसलों के विकल्पों की तलाश में थे, ताकि सीमित संसाधनों के बावजूद कृषि को एक लाभप्रद और टिकाऊ व्यवसाय बनाया जा सके।

कृषक श्री मजबूत सिंह गुर्जर की इस सोच को तब नई दिशा मिली, जब कृषि विभाग के बीटीएम (ब्लॉक टेक्नोलॉजी मैनेजर) श्री राकेश धाकड़ तथा जिला स्तरीय कृषि अधिकारियों ने उनके गांव में चौपाल लगाकर किसानों को प्रेरित किया। कृषि विभाग के उप संचालक श्री मुनेश शाक्यवार एवं बीटीएम के सतत मार्गदर्शन से प्रभावित होकर उन्होंने जैविक, प्राकृतिक एवं शून्य प्रतिशत लागत वाली चिया सीड की खेती को अपनाने का संकल्प लिया।

कम समय, जीरो खाद और चिया सीड की नवाचार खेतीः कृषय श्री मजबूत सिंह ने रबी सीजन में अपने खेत को एक जुताई और पटेला फेरकर तैयार किया तथा प्रति बीघा मात्र 1 किलोग्राम चिया सीड के बीज की बुआई की। इस फसल की सबसे बड़ी खासियत यह रही कि इसमें किसी विशेष या महंगे रासायनिक खाद की आवश्यकता नहीं पड़ी। मात्र 90 दिनों में फसल पककर तैयार हो गई। प्रति बीघा 2.25 से लेकर 3.5 क्विंटल तक की बंपर उपज प्राप्त हुई। नीमच और मंदसौर जिले की मंडियों में चिया सीड का भाव ?25,000 प्रति क्विंटल तक मिल रहा है।

अन्य किसानों के लिए बने प्रेरणा स्रोतः अपनी इस अभूतपूर्व सफलता के बाद श्री मजबूत सिंह गुर्जर अब क्षेत्र के अन्य किसानों के लिए एक मिसाल बन गए हैं। वे गांव-गांव जाकर अन्य कृषक भाइयों को भी जैविक व प्राकृतिक खेती अपनाने, महंगी खादों से बचने तथा चिया सीड जैसी उच्च मूल्य वाली नकदी फसलों को उगाने के लिए प्रेरित कर रहे हैं। उनका मानना है कि सही मार्गदर्शन और नवाचार से कम लागत में भी कृषि से बड़ा मुनाफा कमाया जा सकता है।

व्यक्त किया आभार

किसान मजबूत सिंह गुर्जर ने सरकार की इस योजना के लिए आभार व्यक्त किया है। साथ ही कृषि विभाग एवं जिला प्रशासन द्वारा किसानों के द्वार तक पहुंचकर दिए जा रहे सतत मार्गदर्शन की सराहना करते हुए कृषक श्री मजबूत सिंह गुर्जर ने उप संचालक कृषि श्री मुनेश शाक्यवार, बीटीएम श्री राकेश धाकड़ तथा पूरे कृषि विभाग की टीम का हृदय से धन्यवाद दिया है।

सर्वपितृ अमावस्या पर करें इन पवित्र वृक्षों की पूजा मिलेगा पितरों का आशीर्वाद और खुलेगा सुख-समृद्धि का द्वार

सर्वपितृ अमावस्या 2025- धर्मग्रंथों में सर्वपितृ अमावस्या को पितरों की तृप्ति और आशीर्वाद प्राप्त करने का सबसे बड़ा दिन बताया गया है. इस दिन जहां एक ओर श्राद्ध और तर्पण का विशेष महत्व है, वहीं दूसरी ओर शास्त्रों में कुछ पवित्र वृक्षों की पूजा का भी उल्लेख मिलता है. मान्यता है कि इन वृक्षों में देवताओं और पितरों का वास होता है. इसलिए अमावस्या के दिन इन वृक्षों की आराधना करने से पितर प्रसन्न होकर वंशजों को दीर्घायु, समृद्धि और सुख का आशीर्वाद देते हैं.

सर्वपितृ अमावस्या का दिन पितरों को तृप्त करने और उनका आशीर्वाद पाने का सबसे बड़ा अवसर माना जाता है. इस दिन श्राद्ध, तर्पण और दान-पुण्य के साथ-साथ शास्त्रों में विशेष वृक्षों की पूजा का महत्व भी बताया गया है. मान्यता है कि इन वृक्षों में देवताओं और पितरों का वास होता है इसलिए यदि श्रद्धापूर्वक इनकी पूजा की जाए तो पितर प्रसन्न होते हैं और परिवार पर सुख-समृद्धि की कृपा बरसाते हैं.

सर्वपितृ अमावस्या पर केवल श्राद्ध और तर्पण ही नहीं, बल्कि इन पवित्र वृक्षों की पूजा का भी महत्व है. पीपल, बरगद, आंवला, बेल और तुलसी की श्रद्धापूर्वक आराधना करके आप पितरों की आत्मा को संतुष्ट कर सकते हैं और उनके आशीर्वाद से जीवन में सुख-समृद्धि, स्वास्थ्य और शांति पा सकते हैं.

पीपल का वृक्ष

पीपल को त्रिदेवों का वासस्थान कहा गया है. विष्णु पुराण में इसे पवित्रतम वृक्ष बताया गया है. सर्वपितृ अमावस्या पर पीपल के नीचे दीपक जलाकर जल अर्पित करना और मंत्र जप करना पितरों की आत्मा को शांति प्रदान करता है. साथ ही घर के कलह और दरिद्रता भी दूर होती है.

बरगद का वृक्ष

बरगद को दीर्घायु और स्थिरता का प्रतीक माना गया है. स्कंद पुराण में कहा गया है कि बरगद की पूजा करने से पितरों को दीर्घकालिक तृप्ति मिलती है. इस दिन बरगद के तने पर जल चढ़ाकर और दीप जलाकर पितरों को स्मरण करने से परिवार में आयु और संतानों का कल्याण होता है.

आंवले का वृक्ष

आंवले को अमृत फल कहा जाता है. पद्म पुराण में इसका विशेष महत्व बताया गया है. सर्वपितृ अमावस्या पर आंवले के वृक्ष की पूजा करने और आंवले का दान करने से पितरों को दीर्घकालिक शांति मिलती है. साथ ही घर में स्वास्थ्य और धन-धान्य की वृद्धि होती है.

बेल का वृक्ष

बेल पत्र शिवजी को अत्यंत प्रिय हैं. शास्त्रों के अनुसार, बेल वृक्ष की पूजा करने से पितरों के साथ-साथ स्वयं भगवान शिव भी प्रसन्न होते हैं.सर्वपितृ अमावस्या पर बेल पत्र अर्पित करना और बेल वृक्ष के नीचे तर्पण करना विशेष फलदायी होता है.

तुलसी का पौधा

तुलसी के बिना कोई भी पूजा पूर्ण नहीं मानी जाती. तुलसी पुराण में कहा गया है कि तुलसी में स्वयं लक्ष्मीजी का वास होता है. पितृ अमावस्या के दिन तुलसी में दीपक जलाकर जल चढ़ाने से पितरों को मोक्ष की प्राप्ति होती है और परिवार पर देवी लक्ष्मी की कृपा बनी रहती है.

हड़ताल से पहले आम लोगों की सुविधा के लिए रविवार को खुले रहेंगे बैंक

नई दिल्ली। आम लोगों की बैंकिंग जरूरतों में व्यवधान को कम करने के लिए सरकार ने सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों को रविवार को खुले रखने का निर्देश दिया है। यह फैसला बैंक कर्मचारियों की 28 से 30 सितंबर तक प्रस्तावित तीन दिवसीय देशव्यापी हड़ताल से एक दिन पहले लिया गया है। भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) ने सभी बैंक शाखाओं, कार्यालयों, एटीएम-लिंक शाखाओं और करेंसी चेस्ट को रविवार को पूरी तरह से चालू रखने की मंजूरी दे दी है।

वित्त मंत्रालय ने कहा कि सभी सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक और क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक (आरआरबी) रविवार को सामान्य रूप से काम करेंगे। वित्त मंत्रालय ने एक बयान में कहा, यूनाइटेड फोरम ऑफ बैंक यूनियंस (यूएफबीयू) द्वारा 28 से 30 सितंबर तक प्रस्तावित तीन दिवसीय देशव्यापी बैंक हड़ताल को देखते हुए और इससे पहले 26 और 27 सितंबर को सप्ताहांत की छुट्टियां होने के कारण सरकार ने नागरिकों की बैंकिंग जरूरतों को सुरक्षित रखने के लिए सक्रिय कदम उठाए हैं।

इस कदम से हड़ताल के समय के कारण आर्थिक गतिविधियों में होने वाले व्यवधान को कम करने में मदद मिली है। अगर शनिवार और रविवार दोनों दिन बैंक बंद रहते, तो हड़ताल के कारण बैंकिंग गतिविधियां लगातार पांच दिनों तक प्रभावित होतीं। सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों और क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों की यूएफबीयू तथा कुछ अन्य यूनियनों ने पांच दिन की बैंकिंग व्यवस्था लागू करने और परफॉर्मेंस लिंक्ड इंसेंटिव (पीएलआई) योजना वापस लेने की मांग को लेकर हड़ताल का आह्वान किया है। फिलहाल बैंक कर्मचारियों को महीने में दो शनिवार की छुट्टी मिलती है, लेकिन बैंक यूनियनें बाकी दो शनिवार को भी छुट्टी किए जाने की मांग कर रही हैं। वित्त मंत्रालय ने कहा कि बैंक ग्राहकों का कल्याण और सुविधा सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकता है। सरकार और बैंक प्रबंधन ने यूनियनों से प्रस्तावित हड़ताल को टालने की अपील की है। साथ ही, आवश्यक बैंकिंग सेवाएं बिना किसी रुकावट के जारी रहें, यह सुनिश्चित करने के लिए भी कदम उठाए गए हैं। सरकार ने सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों और क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों के कर्मचारियों से प्रस्तावित हड़ताल वापस लेने की अपील की है। सरकार का कहना है कि उसने यूनियनों की प्रमुख मांगों में से एक को पहले ही पूरा कर दिया है और पीएलआई योजना को फिलहाल स्थगित कर दिया है।

वित्त मंत्रालय ने कहा कि उठाई गई चिंताओं को ध्यान में रखते हुए सरकार ने विस्तृत चर्चा के बाद पीएलआई योजना को फिलहाल स्थगित रखने का फैसला किया।

सरकार की इस पहल से यूनियनों की दो प्रमुख मांगों में से एक पूरी हो गई है। मंत्रालय ने कहा, यूनियनों की अधिकांश चिंताओं का काफी हद तक समाधान किया जा चुका है, शेष मांग पर अभी विचार किया जा रहा है और सरकार बैंकिंग क्षेत्र के कर्मचारियों के लिए कल्याणकारी उपाय सक्रिय रूप से लागू करना जारी रखे हुए है।

फलों और सब्जियों को ज्यादा समय तक ताजा रखने के लिए अपनाएं ये 7 आसान उपाय

गर्मियों के मौसम में सबसे बड़ी समस्या सब्जियों और फलों को फ्रेश रखने की होती है। कई बार तो ऐसा होता है कि ये फ्रिज में भी सूखने लगते हैं। ऐसे में इन्हें सुरक्षित कैसे रखा जाए यह समझ नहीं आता। इनके सूखने या खराब होने से न केवल ये बेस्वाद हो जाते हैं, बल्कि इनकी पौष्टिकता भी खत्म होने लगती है। ऐसे में फलों और सब्जियों को लंबे समय तक फ्रेश बनाए रखने के लिए कुछ कारगर उपायों को अपना सकते हैं। इससे इनकी पौष्टिकता भी बनी रहेगी और स्वाद भी नहीं जाएगा।

आइए जानते हैं ऐसे ही कुछ कारगर उपायों के बारे में।

हरी पत्तेदार सब्जियां

हरी पत्तेदार सब्जियों को खराब होने से बचाने के लिए इन्हें किचन रोल या टिश्यू पेपर में अच्छे से कवर कर किसी प्लास्टिक के बैग में डालकर फ्रिज में स्टोर करें। इससे पत्तियों पर नमी नहीं जमती और ये सड़ने से बचे रहते हैं।

लहसुन और प्याज

गर्मी के मौसम में अक्सर लहसुन सूख जाते हैं और प्याज अंकुरित होने लगता है। ऐसे में इन्हें खराब होने से बचाने और लंबे समय तक ताजा बनाए रखने के लिए बांस की स्टीमर टोकरियों में रखें। साथ ही, इन्हें धूप से भी बचाएं। इससे लहसुन और प्याज को आप लंबे समय तक बिना खराब हुए स्टोर करके रख सकते हैं।

टमाटर

टमाटर के स्वाद और बनावट को लंबे समय तक बरकरार रखने के लिए इसे धूप से दूर रूम टेंपरेचर पर रखें।

जड़ी बूटी ऐसे रखें

जड़ी बूटियों को लंबे समय तक ताजा बनाए रखने के लिए एक गिलास पानी में इनके जड़ों को डालकर रखें और इसे ऊपर से प्लास्टिक की थैली से ढंक दें।

आलू, सेब और नाशपाती

आलू, सेब और नाशपाती बहुत जल्दी खराब होने वाली फल और सब्जी हैं। इसलिए इन्हें हमेशा हवादार बैग या टोकरी में रखें। इसके साथ ही इसे सूखी और ठंडी जगह पर ही रखें। सेब से निकलने वाली गैस आलू को अंकुरित होने से बचाती है।

केला

केला बहुत जल्दी काला पड़ने लगता है। इसलिए इसे लंबे समय तक स्टोर करके रखना थोड़ा मुश्किल हो जाता है। इसलिए इसे प्लास्टिक बैग में केले के ऊपरी भाग को कवर करके रखें। इससे ये लंबे समय तक चल सकता है, क्योंकि केले का तना एथिलीन गैस छोड़ता है , जिसकी वजह से ये जल्दी पक जाता है।

किन लोगों के लिए नुकसानदायक होती है बाजरे की रोटी? एक्सपर्ट से जानें

सर्दियों के दिनों में गर्म तासीर वाली चीजें खाई जाती हैं. बाजरा भी एक ऐसा अनाज है जो सर्दी में खूब खाया जाता है. लोग बाजरा को उबालकर खिचड़ी, दलिया बनाने से लेकर लड्डू तक खाते हैं. फिलहाल सर्दी में भारतीय घरों में बाजरा की रोटी सबसे ज्यादा खाई जाती है. ये अनाज गर्म तासीर का होने के साथ ही कई पोषक तत्व जैसे प्रोटीन, फाइबर, फोलेट, आयरन, मैग्नीशियम, थायमिन, नियासिन, फास्फोरस, राइबोफ्लेविन और विटामिन बी6 समेत कई एंटीऑक्सीडेंट्स से भरपूर है. बाजरा खाने से वेट कंट्रोल, ब्लड शुगर कंट्रोल, हेल्दी स्किन, बाल स्वस्थ रहना, जैसे कई फायदे होते हैं. एक दिन में दो बाजरा की रोटी खाना काफी रहता है.

बाजरा उन लोगों के लिए बेहद फायदेमंद रहता है, जिनको ग्लूटेन से एलर्जी होती है. दरअसल ग्लूटेन एक ऐसा पदार्थ है जो आटे को बांधने का काम करता है या कहें कि उसमें लोच लाने का काम करता है, लेकिन जिन लोगों को ग्लूटेन से एलर्जी होती है, उन्हें पाचन से जुड़ी दिक्कतें होने लगती हैं. ऐसे में गेंहू की बजाय बाजरे का आटा खाना अच्छा ऑप्शन होता है. फिलहाल जान लेते हैं कि किन लोगों को बाजरा की रोटी से परहेज करना चाहिए.

पेट से जुड़ी समस्या होना

आयुर्वेद और नैचुरोपैथी डॉक्टर किरण गुप्ता कहती हैं कि अगर किसी को सीवियर या क्रोनिक एसिडिटी है या फिर अल्सर है तो उसे बाजरे की रोटी या इससे बनी चीजों को खाने से परहेज करना चाहिए. इससे समस्या और भी ज्यादा बढ़ सकती है.

स्किन एलर्जी वाले लोग

एक्सपर्ट कहती हैं कि बाजरा की रोटी से उन लोगों को भी परहेज करना चाहिए, जिनके स्किन एलर्जी है. अगर आपको कोई भी त्वचा की समस्या है, लेकिन बाजरा की रोटी ज्यादा पसंद है तो एक बार अपने डॉक्टर से सलाह जरूरी लेनी चाहिए.

गर्भवती महिलाएं भी करें परहेज

बाजरा का सेवन प्रेग्नेंट महिलाओं को नहीं करना चाहिए, क्योंकि इस अनाज की तासीर बहुत गर्म मानी गई है. बाजरा की रोटी भारी होती है, इसलिए इसे खाने से

नारियल तेल में मिलाकर लगायें ये 2 चीजें

पतली चोटी हो जाएगी मोटी

बालों के पतले होने की समस्या तो जैसे आम हो गई है. कई महिलाएं इससे काफी परेशान है. ऐसे में बालों को मोटा और घना बनाने के लिए वो महंगे प्रोडक्ट्स यूज करती हैं जो कैमिकल से भरे होते हैं. लेकिन आप अपने पतले बालों को घरेलू नुस्खे से भी ठीक कर सकती हैं. बस आपको नारियल तेल में 2 चीजें मिलाकर इस्तेमाल करनी है.

काले और घने बालों की चाहत अमूमन हर किसी को होती है. पर भागदौड़ भरी जिंदगी, खराब खानपान और प्रदूषण की वजह से बालों की समस्याएं तेजी से बढ़ रही हैं. खासकर पतले और कमजोर बालों की समस्या आम हो गई है. पतली चोटी न सिर्फ लुक को खराब करती है बल्कि ये आपके बालों की सेहत को भी बयां करती है. ऐसे में लोग अक्सर महंगे हेयर प्रोडक्ट्स और ट्रीटमेंट्स का सहारा लेते हैं पर इनके भी साइड इफेक्ट्स का खतरा बना रहता है.

आयुर्वेद और घरेलू नुस्खे आपके बालों को मजबूत और घना बनाने में मदद कर सकते हैं. हम आपको बताने जा रहे हैं कि कैसे नारियल तेल में सिर्फ 2 चीजें मिलाकर बालों का पतला पन खत्म हो सकता है. साथ ही बालों की चमक भी वापस आ जाएगी.

बालों के लिए वरदान है नारियल तेल

नारियल तेल को बालों की देखभाल में सबसे असरदार और नेचुरल उपाय माना जाता है.ये बालों को जड़ से मजबूत करता है, उन्हें पोषण देता है और रूसी जैसी समस्याओं को दूर करता है. नारियल तेल बालों की ग्रोथ बढ़ाने और उन्हें घना बनाने में मदद करता है. लेकिन जब इसमें कुछ खास इंग्रीडिएंट्स मिलाई जाती हैं, तो इसका असर दोगुना हो जाता है.

आइए जानते हैं कि नारियल तेल में कौन सी दो चीजें मिलाकर आप पतले बालों को मोटा बना सकते हैं.

1. एलोवेरा जेल

एलोवेरा जेल में विटामिन्स, मिनरल्स और एंजाइम होते हैं, जो बालों की जड़ों को पोषण देते हैं.ये बालों की ग्रोथ को तेज करता है और स्कैल्प को हाइड्रेट रखता है. आपको 2 बड़े चम्मच नारियल तेल में 1 बड़ा चम्मच ताजा एलोवेरा जेल मिलाना है. इस मिक्सचर को हल्का गर्म करें और स्कैल्प पर लगाकर हल्के हाथों से मसाज करें।. इसे 1 घंटे के लिए छोड़ दें और फिर माइल्ड शैम्पू से धो लें.

2. कैस्टर ऑयल (अरंडी का तेल)

कैस्टर ऑयल फैटी एसिड और विटामिन ई से भरपूर होता है, जो बालों की जड़ों को मजबूत करता है और उन्हें मोटा बनाता है. ये डैमेज बालों को रिपेयर करने में भी मदद करता है. बालों को मोटा करने के लिए आपको नारियल तेल में अरंडी का तेल मिलाना है. 2 बड़े चम्मच नारियल तेल में 1 बड़ा चम्मच कैस्टर ऑयल मिलाएं. इसे गुनगुना करें और स्कैल्प पर लगाकर मसाज करें. इसे रातभर बालों में छोड़ दें और सुबह धो लें.

इन उपायों से होंगे ये फायदे

नारियल तेल के साथ इन दोनों चीजों को मिलाकर इस्तेमाल करने से बालों को कई तरह के फायदे मिलेंगे. जैसे बालों की ग्रोथ तेज होगी, बाल जड़ों से मजबूत होंगे, डैंड्रफ और खुजली जैसी समस्याएं दूर होंगी, बालों में नेचुरल शाइन आएगी और पतले बाल मोटे और घने बनेंगे.

किचन के ये 4 मसाले फेफड़ों को रखेंगे हेल्दी! सांस संबंधित समस्याओं से होगा बचाव

बदलते मौसम और पॉल्यूशन की वजह से सांस संबंधित समस्याएं काफी बढ़ जाती हैं. रसोई में मौजूद कुछ मसाले वायरल इंफेक्शन को कम करने और रेस्पिरेटरी प्रॉब्लम से बचाने में कारगर हैं. तो चलिए जानते हैं.

भारतीय मसालों की बात हो तो हर एक मसाले में कई खासियत होती हैं. मसालों का स्वाद और सुगंध से खाने को लजीज बना देती है. मसाले आपके खाने को तो स्वादिष्ट बनाते ही हैं, इनमें कई न्यूट्रिएंट्स मौजूद होते हैं और इसलिए ये कई समस्याओं में दवा से कम काम नहीं करते. रसोई में मौजूद कुछ ऐसे ही मसाले हैं जो आपके लंग्स के लिए फायदेमंद होते हैं और रेस्पिरेटरी सिस्टम यानी श्वसन तंत्र से जुड़ी समस्याओं से राहत दिलाने में हेल्प फुल होते हैं. तो चलिए जानते हैं ऐसे ही 4 मसालों के बारे में जो आपको सांस से जुड़ी दिक्कतों में राहत दिलाएंगे.

बढ़ता पॉल्यूशन, कमजोर इम्यूनिटी और बदलता मौसम, ऐसी कई वजह हैं जिसकी वजह से लंग्स में संक्रमण हो सकता है और सांस संबंधित तकलीफें बढ़ सकती हैं. तो चलिए एक्सपर्ट से जानते हैं कि कैसे किचन में मौजूद कुछ मसाले आपकी श्वसन तंत्र की कार्यप्रणाली को बेहतर बना सकते हैं.

डायटिशियन सुरभि पारीक के मुताबिक, हल्दी, अदरक, लहसुन और ओरेगेनो (इटालियन हर्ब जो भारत में भी कई रेसिपी में यूज होती है), आदि सांस से जुड़ी समस्याओं में फायदेमंद रहते हैं. ये मसाले न सिर्फ सांस संबंधित समस्याओं से बचाव करेंगे, बल्कि अगर आपको कोई समस्या हो गई है तो उससे भी राहत दिलाने में कारगर हैं.

हल्दी है बेहद फायदेमंद

सब्जी में इस्तेमाल होने वाली हल्दी कई न्यूट्रिएंट्स से भरपूर होती है. इसमें पाया जाने वाला करक्यूमिन और अन्य एंटीऑक्सीडेंट्स रेस्पिरेटरी इंफ्लामेशन को कम करते हैं, जिससे सांस संबंधित समस्याओं से राहत मिलती है. वहीं हल्दी आपके इम्यून सिस्टम को भी मजबूत करती है और आप वायरल इंफेक्शन आदि से बचे रहते हैं.

अदरक करेगी सांस संबंधित समस्याओं में सुधार

लंग्स और रेस्पिरेटरी सिस्टम के लिए अदरक का सेवन भी फायदेमंद होता है. अदरक में वैसे तो कई न्यूट्रिएंट्स होते हैं. वहीं इसमें जिंजरोल नाम का कंपाउंड पाया जाता है, जो रेस्पिरेटरी इंफ्लामेशन को कम करने में कारगर है, जिससे म्यूकस रिड्यूस करने में मदद मिलती है और ब्रीदिंग स्ट्रेस कम होता है और आप आराम से सांस ले पाते हैं.

संक्रमण से बचाने में हेल्पफुल है लहसुन

लहसुन में मौजूद गुण कई तरह की सेहत संबंधी समस्याओं से बचाने में कारगर होते हैं, वहीं ये आपके लंग्स के लिए भी काफी फायदेमंद है. लहसुन में एलिसिन और सल्फर कंपाउंड पाया जाता है, जो वायरल इंफेक्शन से बचाने और बैक्टीरिया से लड़ने में मदद करता है. इसलिए लहसुन का सेवन सांस संबंधित दिक्कतों में काफी फायदा पहुंचाता है.

ओरेगैनो (इटैलियन हर्ब)

कई रेसिपीज में इस्तेमाल होने वाली हर्ब ओरेगेनो एंटी माइक्रोबियल गुणों से भरपूर होती है, यह बैक्टीरिया और वायरस से होने वाली समस्याओं जैसे जुकाम-खांसी आदि से बचाने में कारगर है. इसका तेल भी काफी फायदेमंद रहता है.

जानिए फायदा है या नुकसान

क्या सुबह उठते ही आपको भी है गुनगुना पानी पीने की आदत?

सुबह उठते ही गुनगुना पानी पीने के ?कुछ फायदे हैं तो कुछ नुकसान भी हैं. ऐसे में अक्सर लोग इस बात को लेकर कंफ्यूज हो जाते हैं कि आखिर सही क्या है. आइए इसके बारे में हेल्थ एक्सपर्ट से ही जानने की कोशिश करते हैं.

खुद को हेल्दी और फिट रखने के लिए लोग सुबह गुनगुने पानी से अपने दिन की शुरूआत करते हैं. ज्यादातर फिटनेस कोच से लेकर सेलिब्रिटीज भी इस अपने दिन की शुरुआत इसी रुटीन के साथ करते हैं. सुबह उठते ही उन्हें गुनगुना पानी चाहिए होता है. लेकिन कुछ ऐसे लोग भी हैं, जो इस रुटीन को ठीक नहीं मानते हैं. फायदे के साथ-साथ गुनगुने पानी के नुकसान भी हैं.

कुछ ऐसे लोग भी हैं, जो इस बात को लेकर कंफ्यूज रहते हैं आखिर सही क्या है. क्या गुनगुने पानी से अपने दिन की शुरूआत करनी चाहिए. तो आइए हेल्थ एक्सपर्ट से ही इसके बारे में जानने की कोशिश करते हैं. डॉ. वरलक्ष्मी ने हाल ही में एक इंस्टाग्राम पोस्ट के जरिए इसके बारे में बताया है.

पानी पीने का तरीका

कई बार वेट लॉस करने या फिर स्किन को ग्लोइंग बनाने के चक्कर में पानी पीने की टॉर्गेट रखते हैं. वे पूरा दिन इसी रुटीन के साथ चलते हैं. लेकिन हेल्थ के लिहाज से ये ठीक नहीं है. डॉ. वरलक्ष्मी का कहना है कि पानी तभी पीना चाहिए जब आपको प्यास लगे. पानी पीने के तुरंत बाद सॉलिड चीजें न खाएं.

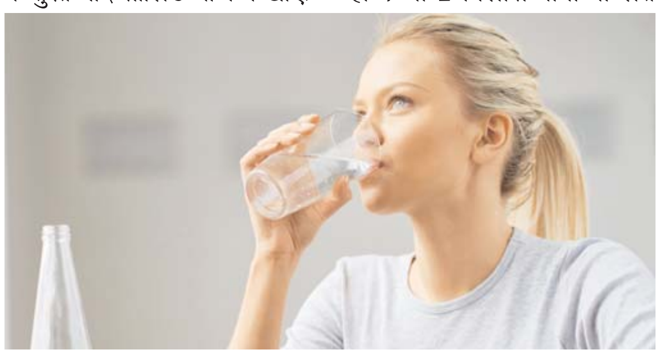

क्या कहते हैं एक्सपर्ट

इस बात में कोई शक नहीं है कि अपने दिन की शुरूआत गुनगुने पानी के साथ की जाए. लेकिन इसके साथ कुछ नियमों को फॉलो किया जाना भी जरूरी है. पानी हमेशा ब्रश करने के बाद ही पिएं. वर्कआउट करने से पहले पानी न पिएं. सुबह ब्रेकफास्ट के साथ आप थोड़ा गुनगुना पानी पी सकते हैं. हालांकि, 100द्ध से ज्यादा पानी न पिएं.

इन बातों का रखें ख्याल

ज्यादातर लोग सुबह उठते ही 1 या 2 गिलास पानी पी लेते हैं. ऐसा करने से उनका मानना है कि पेट साफ होगा. लेकिन इसका नुकसान भी है कि रातभर में आपके मुंह में कई तरह के बैक्टीरिया पनपते हैं. सुबह बिना मुंह साफ किए यही बैक्टीरिया आपके पेट में चले जाते हैं. इस कारण कई परेशानियां बढ़ती हैं.ऐसे में आप गुनगुना पानी हमेशा ब्रश करने के बाद ही पिएं.

मोनालिसा ने की माइक्रो ड्रामा सीरीज की दुनिया में डेब्यू

मुंबई । अपने करियर में एक नया कदम उठाते हुए भोजपुरी अभिनेत्री मोनालिसा ने माइक्रो ड्रामा सीरीज की दुनिया में डेब्यू किया है। मोनालिसा ने अपने नए प्रोजेक्ट की सफलता पर खुशी जताई और पूरी टीम को धन्यवाद दिया। अभिनेत्री ने इंस्टाग्राम पर एक वीडियो शेयर करते हुए लिखा, ÷मेरे प्यारे दर्शकों, मेरे नए प्रोजेक्ट को इतना प्यार देने के लिए आप सभी का बहुत-बहुत धन्यवाद। यह मेरी पहली माइक्रो ड्रामा सीरीज है, और इसे दर्शकों ने इतने स्नेह से अपनाया, इससे बेहतर एहसास नहीं हो सकता। पहली पहल हमेशा खास होती है। मेरे को-एक्टर्स, प्रोड्यूसर, डायरेक्टर और पूरी टीम का दिल से धन्यवाद।÷ मोनालिसा ने अपने इस पोस्ट में फिल्म 'सैयारा' का मशहूर गाना 'सैयारा' जोड़ा, जिसे फरहीन अब्दुल ने गाया है। इसके बोल इरशाद कामिल ने लिखे हैं, जबकि म्यूजिक तनिष्क बागची, फहीम अब्दुलाह और अरसलान निजामी ने दिया है। फिल्म 'सैयारा', जिसका गाना मोनालिसा ने अपने वीडियो में इस्तेमाल किया, का निर्देशन मोहित सूरी ने किया है। इसमें अहान पांडे और अनीत पड्डा मुख्य भूमिकाओं में हैं। फिल्म की कहानी दो ऐसे युवाओं के इर्द-गिर्द घूमती है जो टूटे दिलों के बावजूद जिंदगी को नए सिरे से जीने की कोशिश करते हैं अहान एक संगीतकार है जो अपने दर्द को सुरों में ढालता है, जबकि अनीत एक लेखिका है जो कविताओं में अपनी भावनाओं को बयां करती है।

मोनालिसा का यह नया कदम उनके करियर के लिए एक रोमांचक मोड़ साबित हो सकता है। भोजपुरी इंडस्ट्री से अपनी पहचान बनाने वाली मोनालिसा ने साल 2008 में फिल्म 'भोले शंकर' से डेब्यू किया था। इसके बाद उन्होंने 100 से ज्यादा फिल्मों में अभिनय किया और कई हिट आइटम सॉन्ग्स में अपनी अदाओं से दर्शकों का दिल जीता।

धरती का अदृश्य विद्युत क्षेत्र और उड़ती मकड़ियां

डॉ. विजय गर्ग

हमारे आसपास की हवा, विशेषकर साफ और शांत दिनों में, विद्युत की दृष्टि से बिल्कुल शांत दिखाई दे सकती है। लेकिन वास्तव में पृथ्वी का वायुमंडल एक सूक्ष्म विद्युत क्षेत्र से भरा हुआ है, जो बिना किसी दिखाई देने वाले तूफान या बिजली की चमक के भी मौजूद रहता है। यह अदृश्य शक्ति पृथ्वी की सतह, वायुमंडल और बादलों को जोड़ने वाली एक विशाल विद्युत प्रणाली का हिस्सा है।

पृथ्वी की सतह के निकट, साफ मौसम में वायुमंडलीय विद्युत क्षेत्र सामान्यतः लगभग 100ड्ड150 वोल्ट प्रति मीटर होता है। हालांकि, यह स्थान, मौसम और वायुमंडलीय परिस्थितियों के अनुसार बदलता रहता है। गरज-चमक वाले तूफानों और अन्य अस्थिर मौसम के दौरान यह विद्युत क्षेत्र काफी अधिक शक्तिशाली हो सकता है। पौधे, इमारतें और अन्य वस्तुएँ भी अपने आसपास के विद्युत क्षेत्र में स्थानीय परिवर्तन उत्पन्न कर सकती हैं।

आश्चर्यजनक बात यह है कि कुछ मकड़ियाँ इन अत्यंत कमजोर विद्युत संकेतों को महसूस करने में सक्षम दिखाई देती हैं।

छोटी मकड़ियों के लिए वायुमंडल केवल हवा का माध्यम नहीं है, बल्कि यह उन्हें यह संकेत भी दे सकता है कि फैलने या यात्रा करने के लिए परिस्थितियाँ कब अनुकूल हैं। नवजात मकड़ियाँ और कुछ अन्य छोटे जीव 'बैलूनिंग' नामक व्यवहार का उपयोग करते हैं। इसमें वे रेशम के अत्यंत महीन धागे छोड़ती हैं और हवा के साथ दूर तक चली जाती हैं। इस प्रकार वे नए क्षेत्रों तक पहुँचकर वहाँ अपना आवास बना सकती हैं।

लंबे समय तक यह माना जाता रहा कि मकड़ियों की इस अद्भुत यात्रा का मुख्य कारण हवा है। लेकिन शोध से पता चला है कि विद्युत क्षेत्र भी इस प्रक्रिया में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। मकड़ियों की टाँगों और शरीर के महीन बाल स्थैतिक विद्युत बलों के प्रति प्रतिक्रिया कर सकते हैं और उन्हें आसपास के विद्युत वातावरण के बारे में जानकारी दे सकते हैं।

जब मकड़ी को परिस्थितियाँ अनुकूल महसूस होती हैं, तो वह अपना उदर ऊपर उठाकर रेशम के महीन धागे छोड़ सकती है। यह रेशम आसपास के विद्युत क्षेत्र के साथ परस्पर क्रिया कर सकता है और स्थैतिक विद्युत बलों से प्रभावित हो सकता है। इससे मकड़ी को कमजोर हवा की स्थिति में भी हवा में उठने या उड़ान शुरू करने में सहायता मिल सकती है। इससे संकेत मिलता है कि 'बैलूनिंग' केवल हवा के कारण होने वाली निष्क्रिय प्रक्रिया नहीं है, बल्कि इसमें मकड़ी, उसके रेशम, वायुमंडल और पृथ्वी के विद्युत क्षेत्र के बीच एक जटिल संबंध हो सकता है।

यह घटना तब और भी रोचक हो जाती है जब हम इसके सूक्ष्म स्तर को समझते हैं। लगभग 120 वोल्ट प्रति मीटर का विद्युत क्षेत्र होने का अर्थ यह नहीं है कि मकड़ी को 120 वोल्ट का झटका लगता है। विद्युत क्षेत्र की तीव्रता यह बताती है कि दूरी के साथ विद्युत विभव कितनी तेजी से बदलता है। मकड़ी जैसे अत्यंत छोटे जीव के स्तर पर ये सूक्ष्म स्थैतिक विद्युत बल भी जैविक रूप से महत्वपूर्ण हो सकते हैं। पौधे भी इस वातावरण को प्रभावित कर सकते हैं। उनकी पत्तियाँ और सतहें अपने आसपास के विद्युत क्षेत्र को बदल सकती हैं और छोटी-छोटी विविधताएँ उत्पन्न कर सकती हैं, जिन्हें कुछ कीट और अन्य जीव महसूस कर सकते हैं। अस्थिर मौसम के दौरान वायुमंडल की विद्युत स्थिति में भी काफी परिवर्तन हो सकता है, जिससे शांत दिनों की तुलना में जीवों के लिए एक अलग भौतिक वातावरण बन जाता है।

मकड़ियों की विद्युत संकेतों के प्रति प्रतिक्रिया जीव विज्ञान के एक महत्वपूर्ण सिद्धांत को दर्शाती है—जीव ऐसे पर्यावरणीय संकेतों को भी महसूस कर सकते हैं, जिन्हें मनुष्य सीधे अनुभव नहीं कर सकता। हम मुख्य रूप से दृष्टि, श्रवण, स्पर्श और गंध जैसी इंद्रियों पर निर्भर करते हैं, लेकिन अनेक जीव चुंबकीय क्षेत्रों, विद्युत क्षेत्रों, कंपन, पराबैंगनी प्रकाश और अन्य सूक्ष्म भौतिक संकेतों को महसूस करने की क्षमता रखते हैं।

मकड़ियों की 'बैलूनिंग' यह भी दर्शाती है कि भौतिक विज्ञान और जीव विज्ञान एक-दूसरे से कितनी गहराई से जुड़े हुए हैं। एक ऐसा व्यवहार जो हमें लगभग जादुई लगता है—एक छोटी-सी मकड़ी का हवा में तैरना—वास्तव में वायुगतिकीय बलों, स्थैतिक विद्युत, रेशम के गुणों और पर्यावरणीय परिस्थितियों के संयुक्त प्रभाव से समझा जा सकता है।

विभिन्न मकड़ी प्रजातियाँ विद्युत क्षेत्रों को किस प्रकार महसूस करती हैं और प्राकृतिक परिस्थितियों में बिजली उनके लिए कितनी महत्वपूर्ण है, इसके बारे में अभी भी बहुत कुछ जानना बाकी है। यह घटना हमें याद दिलाती है कि वायुमंडल केवल जीवों को घेरने वाला खाली स्थान नहीं है। यह दबाव, तापमान, नमी, आयनों, विद्युत-चुंबकीय प्रभावों और विद्युत क्षेत्रों से युक्त एक गतिशील भौतिक संसार है।

इसलिए पृथ्वी की अदृश्य बिजली भी उस प्राकृतिक संसार का हिस्सा है, जिसमें अनगिनत जीव प्रतिदिन जीवन व्यतीत करते हैं। जहाँ मनुष्य सामान्यतः इस विद्युत वातावरण से गुजरते हुए इसे महसूस नहीं करते, वहीं छोटी मकड़ियाँ इसे उन संकेतों में से एक के रूप में उपयोग कर सकती हैं, जो उन्हें बताते हैं कि कब और कैसे उड़ान भरनी है।

साफ आकाश हमें खाली दिखाई दे सकता है, लेकिन हमारे ऊपर तथा प्रत्येक पत्ती, पौधे और जीव के आसपास एक अदृश्य विद्युत संसार मौजूद है। एक छोटी-सी मकड़ी के लिए यह अदृश्य विद्युत क्षेत्र कभी-कभी वह संकेत हो सकता है, जो उसे अपना रेशम छोड़ने, हवा को पकड़ने और एक अद्भुत यात्रा शुरू करने के लिए प्रेरित करता है।

स्वामी, प्रकाशक , मुद्रक रामकिशन तायल 'फौजी' ने श्रमसाधना प्रिन्टर्स, भगवती निवास पारखजी का बाड़ा दौलतगंज, ग्वालियर से मुद्रित एवं प्रकाशित। सम्पादक : महेश तायल समाचार चयन हेतु पीआरबी एक्ट के तहत अधिकृत
e.mail- Shramsadhnagwl@gmail.com ph. 0751-2625029, 98270 17078, 9425007142 समाचार पत्र में प्रकाशित सभी आलेखों में लेखकों के अपने विचार हैं। सभी विवादों का न्याय क्षेत्र ग्वालियर होगा।